

28

June  
Wednesday

1989

भरोसा जिसका भगवान में है  
उसे कोई चिन्ता न करनी पड़ेगी  
जमाना तो उसको इबोना ही चाहे  
मगर नाव उसकी तरी है तरेगी

राणा जी ने डीश को जिला ही चाहा  
जो जा सापं काला जहर भी पिलाया  
राणा जी ने समझा मीरा मरेगी - मगर -

विपत्ति द्रौपदी पर दुर्योधन ने डाली  
नहन करना चाहा समा। बीच सारी  
दुर्योधन ने सोचा नहन हो के रहेगी

जमाना तो भनतों पर हँसी करता आया  
बिना मोल भनतों से अनगड़ा लगाया  
दुनिधां ने सोचा महिमा घटेगी

159

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

31

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

160

June  
Thursday

29

भीतर है सरवा तेरा सरवा  
मन लेगा तेरा देरवा  
अन्ताकरण में शान नहीं ज्योति  
ज्योतिजला के देरवा

है इन्हियों की शक्तियाँ बाहर की ओर जो  
बाहर से तोड़ करके अनन्दर से जोड़ दो  
कर सकला ढार बन्द समाधि लगा के देरवा

सद्गुर आत्मा में अपनी रथना का द्यान कर  
निश्चय ही भूम जारगा महिमा का गानवर  
सद्गुर की रुठी छह देवी गना के देरवा

सारवी पवित्र देव है बिगड़ी बले न क्यूँ  
जीवन ये मेरा भवित के रस में भीगेन क्यूँ  
आत्मा के आनन्द का जीवन बना के देरवा

30

June  
Friday

161

1989

भाव का भूरवा हुँ मैं बस भावही लू सार  
भाव से मुझ को अजे जो भाव से बेड़ा पार है

अन्न धन और वस्तु आमूलण कुछ ना गुम को  
आप हो जाए मेरा बस यही मेरा सतकार है

भाव बिन सब कुछ दें डालो तो भी मैं लेता नहीं  
भाव से एक छूट भी दो तो मुझे स्वीकार है

भाव बिन सूनी पुकारे मैं तभी सुनता नहीं  
भाव वाली ठंडे ही करती गुमेलाचार है

जो भी मुझे भाव रख कर मेरी लेता है शरण  
उसके और मेरे हृदय का एक रहता तार है

भाव जिसमन मैं नहीं उसका मुझे चिन्तन नहीं  
भाव वाले भक्त का भरपूर गुरु पर भार है

बांध लेते भक्त गुरु को भाव की जंजीर से  
इसलिए इस भूमि पर होता जेरा उत्थार है

162

July  
Saturday

1

1989

मन मस्त हुआ फिर वगा लोले

हीरा पांथो गाँठ गठायो  
बार २ वाको क्यों रवोले

सुरत कुलहाड़ी भई भतवारी  
मध्यवा पी गई बिन लोले

छल्की थी तब चढ़ी तराज़ु  
पूरी भई फिर क्या तोले

हसां पांथो मान सरोवर  
ताल तलैया क्यों डोले

तेरा साहिब तेरे मन में ही वसदा  
बाहर नैना क्यों रवोले

काहत कबीर खुनो भई सांथो  
साहिब मिल गया दिल ओले

Sunday

163

3

July  
Monday

1989

मेरी रसना से प्रभु तेरा नाम निकाले  
हरं यड़ी हर बोले ओग २ निकाले -२

मन मन्दिर मे ज्योत जगाऊँगी  
प्रभु सदा गैं तेरे गुण गाऊँगी  
मेरे शोग २ विचो ओग २ निकाले  
हर - ..

जेरे अवगुण चित से भुला देना  
मेरी जैया पार लगा देना  
तेरी धार विच जीवन तमाम निकाले

तेरी जहिंगा का सदा गुप्त गान कोई  
तेरे तचनों का नित मै रघान घरौं  
तेरों धार विच जीवन तमाम निकाले

कान की जो धार आई, उश्नों को लहान दो,  
गुप्त राहों से आता हो, वो राह रन्धां जो,  
जात नन गे उत्तरना हो, उस भन जी रन्धां दो,

मुहांग ने अमर भो, ऐनाम ठड़ी जाना  
मुहांग जा रही मेरी, जाहो बो तो जान दो -२

मुहों ने मेरे रथाई, नजांग मैं रन्धां हो.  
इन लार जरा खिर रहे, जगों मैं रन्धां दो -२

मुहों जो पुकारो तुक्के, डांजन मैं पापा तुक्के  
मुझे ने तरों ने तुक्के, उपने मैं जलान दो।

164

4

July  
Tuesday

1989

मेरे दादा की गुरली क्या है बोले प्रे  
अह बासं की टकड़ी क्या है बोले "

मिली मानुष की ये देही  
जिसकी काढ़र न जाने कोई  
इस मानुष जन्म को कौन है पाए ०

बलों प्रेम नगर में प्यारे  
सच्चा आनन्द गुरु के द्वारे  
प्यारे प्रभु की रचना को कौन है पाए

जिसने प्रेम की माला पहनी  
है सतगुरु उसका साथी  
इस मन की गुरली को कौन है रबोले

जो गुरु वचनों को ध्याये  
वो अन्तर भुख हो जाए  
ऐसी सहज समाधि कौन सिखाए

जो प्रेम नगर में आए  
वो आनन्द इस को पाए  
इस आत्म पद पर कौन विहाए

जो शह्वा से यहाँ आए  
वो ज्ञान गांगा में नहाए  
वो सबको सिखाए मेरा दादा

5

165

July  
Wednesday

1989

मैंने ऐसा सतगुर पाया  
मेरा रोम २ रिक्त आया

ऐसी ज्ञान की ज्योत जलाई,  
 अज्ञानता की उत्तरी काई,  
 हरि नाम मोहे भाया ॥३॥

मोह जाया के बन्धन छुटे,  
 तेरी मेरी के भ्रान्ति भी छुटे।  
 मैंने सब ऐं प्रभु को पाया

ऐसी लगाज है लागी मोहे,  
 जहाँ गी देवता तू ही तू है।  
 मोहे ओर कुछ नहीं गाया

जैया छोड़ी आप हवाले,  
 आप संभाले था न संभाले।  
 मैंने छुटकारा पाया ॥४॥

166

July  
Thursday

6

1989

मेरी जिन्दगी में क्या था तेरी कृपा से  
 मैं कुमा हुआ दीया था तेरी कृपा से पहले  
 मैं तो खाता एक जरा  
 और क्या थी मेरी हस्ती  
 थुं-थपेड़े रखा रहा था  
 तुफां में जैसे किरती  
 दर बदर भटक रहा था, तेरी

मैं तो इस कदर जहाँ में  
 जैसे रकाली सीप होती  
 मेरी बढ़ गई है कीमत  
 तूने भरं दिया है मौती  
 मुझे कौन पुष्टा था

थुं तो है जहाँ में लारको  
 तेरे जैसा कौन होगा  
 तेरे जैसा बन्धा परवर  
 भला ऐसा कौन होगा  
 मेरा कौन आसरा था

तू जो मेहरबान हुआ तो  
 ये जहान मेहरबान है  
 ये जमीन मेहरबान है  
 आरम्भान मेहरबान है  
 मेरा खुद तलव, जुदा था

तेरी रहगते नड़ी है  
 तू भी सतगुर बड़ा है  
 तेरी रहगता को ठालुर  
 कौन द्वासा गा सला है  
 न चे गीत ना गला था  
 तेरी नाना हो पालत

7

167

July  
Friday

1989

मैं आप ब्रह्मानन्द मैनु वेद गांधा  
समझिए करके भेरवो प्यारा नजर आवदा  
मत भूलों भटको प्यारे वेला हृष्ण आमंदा

प्रभु को रवोजन मैंचली मधुरा छवारका  
देही मैं उसका नास उद्धम करो विचारका

प्रभु को रवोजन मैंचली मैं आपा भूल गई  
तज मन मैं व्यापक भोरे और से दूध मैं दही

मैं पाँच वोल से दूर मेरा सारती स्वरूप है  
मैं उनादि जग्ध्य अन्त मेरा यही स्वरूप है

तिलों मैं और से तेल है मेहन्दी मैं और से रंग  
मैं सर्व व्यापक आत्मा रहता हूँ सबके संग

168

July  
Saturday

8

1989

मेरा सतगुरु प्यारा मीत है  
मीतों से प्यारा मीत है

सतगुरु शब्द इच्छारदे  
जिवे अमृत वर्षा हो रही  
जन्म २ की बिद्धड़ी मैं तो  
रक्त से राजा हो गई<sup>१</sup>  
मेरा सतगुरु परम पुनीत है - मीतों --

जोह माया के जाल मैं गैलों  
अपना आप गवांचा सी  
पूरे गुरु ने कृपा की  
बांध पकड़ के पार लगाचा सी  
ये तो महापुरुषों की रीत है

आपे रवेल रिवलाडी मोहन,  
आपे रवेल रन्चावदा<sup>२</sup>,  
सतपुरुषों के वाक्य द्वारा,  
मैद सारा रवुल जावदा<sup>३</sup>,  
वो तो छुप २ करते पुनीत है

मैं सतगुरु की सतगुरु भेरे,  
दोनों ही संक स्वरूप हैं  
जल थल व्यापक पूर्ण सार,  
झो हम ब्रह्म स्वरूप हैं  
तेरा वेद भी गाते गीत हैं  
मीतों से प्यारा गीत हैं

10

July  
Monday

169.

1989

मेरा जीवन सतगुर ने तो रो लब्दल दिया  
सतगुर के सांग दूजा जन्म मिल गया

जो है सच की राह पे चलता जा है उससे खफा  
खुद भी डूबे हुमे भी डुबए यही है उनकी रुगा  
जिसने जग को गोर से देखा उसने जान लिया

डौर मेरी सतगुर से बंधी रहेगी सदा  
नजर मेरी सतगुर से गिलती रहेगी सदा  
मेरे जीवन में दादा जे जीवन गर दिया

निराकार से साकार जो लो हमारे लिए  
मनुष्य से भगवाज लजाया रहे हैं उनकी  
मेरे जीवन में दादा जे अमित्त भर दिया  
आजहर

1989

July  
Tuesday

170.

11

मेरे संकिमा बता दे वो शराब को  
जिसे पी के सारी दुनिया तेरे दर पे रुगती है

फैलेगा मेरा दामन सी बार तेरे आगे  
बहरे सबा बता दे तेरे दर पे क्या करती है

तू छजार बार छुकरा मेरा सर यही छुके गा  
है मही मेरी छबादत मेरी बन्धगी यही है

तौका हुनाहु मेरे क्या २ किया था जौनों  
द्वस पर भी तू नवाजे तरी बन्धा परवरी है

171

मैं देरहु जिस और स्वरी री  
सामने मेरे साँवरिया

ग्रेम ने जो गन छुभा को बनाया  
तन को प्राक्ता मन की जलाया  
ग्रेम के दुरब में हूब गया दिल  
जैसे जल में गागरिया

रो २ कर छर दुरब सहना है  
दुरब सह २ कर चुप रहना है  
कैसे बताऊ कैसे बिछड़ी  
पी के शुरब से बांसुरिया

दुनियाँ महती गुदाको दीवान  
कोइ न समझे धीत की लाजी  
साजान राजन रटते रटते  
हो गई आज तो बाँसुरिया

12

July  
Wednesday

172

मुझे गर्ज न और सहारो की  
इक तेरा सहारा काफी है  
मम्माधार में डूबने वालों को  
इक तेरा इशारा काफी है

लनू के सहारे दूटते हैं  
जो रस्म पुरानी है जग की  
जो दूटे कमी और घूटे जा  
वो तेरा सहारा काफी है  
  
नजारों को खोरवा देते हैं  
दुनियों को दो गँठे नजारे हैं  
जो काष्ठ हुगेशा रहता है  
वो तेरा नजारा काफी है

जहां रिश्वत और सिफारिस से  
लाभ नहीं लन सकता है  
मेरे बिगड़ी नन जाने के लिए  
इक तेरा इशारा काफी है

हसराज पपीहे जो गतल्क क्या  
नदियों और तलाबों से  
स्वाति की लरसे बादल से  
केवल इक चारा काफी है

1989

0

173

July  
Thursday

13

1989

मेरे सतगुरु एपरे ने मेरा जन्म शरण दु~~ख~~का  
मेरे प्रीतम एपरे ने मेरा आना जाना भिटा दिया

मनवाणी बुद्धि नहीं जानत वेद कहे सबुचाई  
राम रमेया परज पुरुष है वाट भाही दर्शया  
जान अजान डाल दिया मेरा वेद भाव सरानिता  
दिया

तीन गुण भाषा से उपजे भाषा का विस्तारा  
त क्युं उसमें उलझ रहा है तेरा स्वप्न अपारा  
बांहं पकड़ उबार लिया भोहे भाव सिन्धु सेपार  
किया

अवण मनन से जागा मनवा सुरति शब्द में समाई  
प्रेम साहेत निद घासन कर मन परम धाम को पाया  
मेरे सतगुरु एपरे ने भेरा आवागमन है भिटा दिया

वार वेद नित वचनी उतरे ता का मर्म ना पाया  
बुझे नहीं एक सिद्धारथ सकली चाल चलावे  
मेरे सतगुरु एपरे जे संसो का कोट मेरा दूर  
किया

बीज के अन्तर तस्वर शारवा पुष्प पत्त फल पापा  
आत्म में ही है परमात्म जीव जाल और भाषा  
मेरे सतगुरु एपरे जे मुझे आत्म के संजोड़िया

जा कोई मेरा रहा है दुश्मन ना मैं किसी का वैरी  
जाल पसारा पसर रहा है सतगुरु रसे सोभी पाई  
मेरे सतगुरु एपरे जे आत्म का रसपिला दिया

14

July  
Friday

174

1989

मुझे को रखा जा बान आ है  
जिल गया

में तो अमरी हूँ मौज में सरताज मिल गया

सतगुरु की शरण आए जो सो भाग्यवान हो  
उनकी इक नजर से सारा अंधियारा दूर हो  
वो देता भेद ज्ञान का गाँड़ार मिल गया

मालिक की ये सब मौज है एरा सतगुरुदें दिया  
मुझे जैसे कर्ग हीन को जिन आपना कर लिया  
जीवन की नैया का मुझे इन गांभीर्या मिल गया

मैं कैसे गुरु के ध्रेम की अल महिमा गा सकू  
शक्ति नहीं है जुबान को उनके हृरण गा सकू  
तुल मालिक जुँके ज्ञान का दिलदार मिल गया

पैर गाने वाले लाता, पैर दूने जैलाने वाले  
पैर-पैर जाता है भूमि, उपना जा जा दूलाने

15

०

15 Sunday

July  
Saturday

175

1989

मया है जो पाकीरी में अमीरी क्या साहित्य  
छसे हरदम खुशी रहती उसे हरदम लगी आहे

नहीं जगंत में जाने से नहीं बस्ती में रहने से  
ग्रहस्य आजाम से क्या मतलब न सन्यासी कहताने  
पलटती है मनोवृति वो ही निहाल हो जाए

दीवाने उस की महफिल के नहीं बैचेन होते हैं  
वो सोने पर भी जगते हैं वो जगने पर भी सोते हैं  
पड़ा अन्दर में जो रस है वो ही हरदम घलघात है

नहीं परवाह काटो की न फूलों से मुहब्बत है  
सभी में इक खुदाई है जो कि मेरी ही शोहरत है  
हराया दिल को विषधों से वैही नुस्खा अनजमापाहै

किसी से न शिकायत है न खुद करता भरारत है  
जो मंजिल पर पहुँच जाता भिटी भट्कन की आदा है  
उसी आनन्द की लहरों में नदों में भूमता रहता

17

July  
Monday

176

1989

मैं तो उन सातों का दास  
जिन्होंने मन मार लिया

मन मारा तन बग्रा किया  
सभी भ्रम हुए दूर  
बाहर से कुछ सुन्हत नाहीं  
अन्तर बारसे दूर

आपा मार पड़ता मैं बैठ  
जहीं किसी से काम  
इनमें कोई अन्तर नाहीं  
सन्त कहो नाहे राग

जर्सी दीजे सत्गुरु स्वामी  
पीया अमीरसा एपाला  
एक छुंद रागर से गिल गड़  
व्या करेगा यमराज

एपाला पी लिया जाम का  
छोड़ चागत का गोह  
मुझ को ऐसे सत्गुरु गिनार  
सहज गुच्छि गड़ होए

18

July  
Tuesday

177

1989

मुझे मेरी मस्ती कहाँ ले के आदृ  
जहाँ मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है  
लगा जब पता गुम्फ को हस्ती का मेरी  
विना मेरे अपने पाहाँ कुछ नहीं है

सभी मैं सभी से परे हैं मैं हूँ  
सिवा मेरे अपने काहाँ कुछ नहीं है शुगा की  
न दूरत है न सुरक्षा है जहीं शोक कम्पनी  
अज्ञब है ये मस्ती पिया कुछ नहीं है

ये सागर ये लहरे, ये झाड़ में बुद्धुदेह  
कालित हैं जल के सिवा कुछ नहीं है  
ओरे मैं हूँ आनन्द आजनन्द है मेरा  
है मस्ती ही मस्ती पिया कुछ नहीं है

जग मेरे दूर्दृश का जो गुम्फ मेरा था  
मिटाया जो मेरे दूर्दृश के रूपता कुछ नहीं है  
ये पर्दा दूर्दृश का हता के जो देरता  
सभी दूर्दृश मैं हूँ जुला कुछ नहीं है

19

July  
Wednesday

178

1989

माल त्वागो मेरो राम पकीरी अ में  
जो एश्वर पापो भैने राम भजन मे  
स्तो रुद्रव नाही अमीरी गे

भला युरा सब का सुन लीजो  
कर गुजरान गरीबी मे

हाथ गे टोची लगत मे शोटी  
चारो ऊर जगीरी गे

धेम .. नार गे रहणी हमारी  
भत्ती नन आई सबुरी गे

आरिरि गे तन रवाक मिलेगा  
काहे पिरत गगरी मे

भाई नन्हु कुटख कालीला  
बान्धागो भोहे जंगीरी मे

कहा रालीर सुनो भई सापो  
साहिन मिलेगे सबुरी मे

1989

July  
Thursday

179

20

माल तु ज्योत स्वरूप है भनत शाल-  
अपना युल पहचान, हरि जी तेरे भाल है  
युरु जाते रां माण भनत युरु जति रवं माण

मूल पद्धनों ता सो जानो ता जीवन भरण की रोमी  
युरु प्रसादी स्तको जनिए ता कुजा भाव न होइ देष

मन प्रान्ति आई वजी लोचाइ तां होइ परवान  
ताहे नानक भनत ज्योत स्वरूप है  
अपना युल पद्धान

सजन मिले न विघडे अन दिन मिले रहन  
इस जग विरले जानिया नानक सच लहन

मिज धनेरे कर पकी मेरा दुख न काटे कोग  
मिल प्रीतम दुख कीटया शब्द मिलवा होए

हो दूढ़ दिया साजना साजन मेरे भाल  
जिन नानक अलस्त न तिरिया  
युरु मुरव लेहु लरवाय

21

July  
Friday

180

1989

महुलों में नहीं कृष्णमा में नहीं  
जहाँ याद करो भगवान् वही  
भगवान् तो ध्रेम के वश में हैं  
वो तो सब के दिल में बसे गई

क्यूँ पाप कमा के अपन जोड़ा  
कोड़ी के लिए नाता तोड़ा  
सोने में नहीं चांदी में नहीं

क्यूँ छिप कर पेर रहा आत्मा  
कुमो देख रहा अन्दर जाता  
जन्मर में नहीं जन्मर गे नहीं

पाताल गगन और जल थल में  
भक्तों के लिए आए पल में  
गंगा में नहीं जमना में नहीं

ओ प्रकृति प्रभु की गाया है  
उस चरमेश्वर की द्याया है  
सूरज में नहीं घनदा में नहीं

सब जग में दर्शन को पिरते  
क्यूँ याद नहीं दिल में करते  
मनिकर में नहीं मस्जिद हो नहीं

181

July

Saturday

22

1989

मुझे है काम ईश्वर से जगत् रुठे तो

कृष्ण परित्वार सुत द्वारा धन और लालू लोगन वर्ष  
हरि के भजन करने से अगर घूटे तो घूम्ह दे

बैठ संग में सन्तन के कर्स काटपाण में अपना  
लोग दुनिया के भोगन में भोज लड़े तो तूष्णी

प्रभु काटपाण करने की तरी दिल में तजन भा  
प्रीत ससार विघ्यों की अगर घूटे तो घूम्ह दे

चरे सिर पाप की गठरी मेरे गुरुदेवने भाटवी  
तो भस्त्रानन्द में पटकी अगर फूटे तो फूलटे

अज्ञन ३(१४)

मन कहे भगवा नम्म, शोक संभाव नन व-२

मन तरी जात नुँ लाख कंदर वी बंड, बंदरवी  
तु है जची जौत ग्वराप - जौत नुँ पल्लान मह-२

- मन ईश्वर तु राज किंचना, तरो राज किंचना  
शुभ कर्म ताही लगा, गुबन नुँ पाक नन व-२.

- तु है राहन राह इस लो जग दो, इस सोरजगादो  
की विच झा के जीव जन् जनका जी जान-२

- तरो शोरु लाली न्यात, जात नुँ पहाचान कर के -२.  
मत बढ़ दो गरण किंच, मन ठोका दाज जी -२  
इस जींदगी दा करी तावरा, ऊमु नाम प्रीत पाल -२.)

24

July  
Monday

182

1989

मैं हूँ आनन्दका ये स्वरूप  
मैं हूँ वट २ लासी स्वरूप

नेराकार से साकार होकर अपना रवेत रचाया  
सब वट भीतर गेरी ज्योति मैं ही सबजे सगाया

सूर्य बन्द्र में है शक्ति गेरी मेरा ही न्यूर सगाया  
धरती गगन में गस्ती है गेरी सजा वट मैं ही रगाया

धूल में जैसे सुगन्ध सगाई गोहन्दी में जैसे लाती  
सर्व व्यापक आत्मा मैं हूँ मैं हूँ वट २ लासी

नानक भी मैं हूँ गौतम भी मैं हूँ मैं हूँ श्याम गुरारी  
राजा भी मैं हूँ रक्ष भी मैं हूँ मैं हूँ पुरन्ध और गारी

काई स्ट्रियन कर दात्य हुआ मैं रूती की रोजा राजाई  
गहोगद्द और मन्द्रसुर बन कर अनलहक की घुणी गहु

राम भी मैं हूँ रहीग भी मैं हूँ मैं हूँ लीला न्यारी  
ब्रेगमपुर मैं रहन हगारी मैं हूँ रवेत रिविलारी

मेरी लीला सबसे न्यारी गेरा गोद जाने कोई  
सतगुरु शरण में जो भी उआए गेरा गोद ये जाने कोई

धन्य है मेरे दादा लद्धी जिसने आज राह पिरताई  
राज रहनी सब को लता के सत्य ती जोत जगाई

183

July  
Tuesday

1989

25

मिलता है लड़े भाग्य से नर कृष्ण की कमी  
आते हैं इसी लेख में भगवन कमी कमी

कोई बुरा नहीं है भले मन के लास्ते  
इस मन से ही मिल जाते हैं प्रीतग कमी कमी

जब तक है जिन्दगी स्थी को हरसा के जी  
हरसं २ कर सुलभ जाती है उलझन कमी कमी

भगवान और द्वन्द्वान में कोई धर्का नहीं  
नहीं उद्योत दूध पर आती है द्वज २ कमी कमी

भगवान ने द्वन्द्वान बना कर घटी कहा  
मुख को भी सुहाता है ग्रह लन्धन कमी कमी

निर्मल हो हर दिल और जुवा दो नाम हो तेरा  
इतने में ही मिल जाते हैं दर्शन कमी कमी

26

July  
Wednesday

8.4

1989

मेरा सत्त चित आनन्द रूप कोई न जाने दें

दैत वचन का मैं का हूँ द्रष्टा  
 मन काणी का मैं हूँ सृष्टा  
 प्पारे मैं हूँ सारी स्वरूप कोई २

जन्म मरण मेरा कर्म नहीं है  
 पाप पुण्य मेरा कर्म नहीं है  
 प्पारे मैं निज आनन्द निर्लेप अरूप

पाँच कोष से मैं हूँ ज्यारा  
 तीन अवस्था से भी ज्यारा  
 प्पारे मैं हूँ अद्वैत स्वरूप

सूर्य चन्द्र मैं रूप मेरा हूँ  
 आगि मैं भी तेज मेरा हूँ  
 प्पारे मैं हूँ प्रकाश स्वरूप

तीन लोक का मैं हूँ स्वामी  
 वट २ व्यापक अन्तर यागी  
 प्पारे ज्यु माता मैं सूत

चेमी त२ निज रूप पहचानो  
 जीव द्वित्रा का भेद ना मानो  
 प्पारे मैं हूँ भैष स्वरूप

185

July

Thursday

27

1989

मेरे साहिब गेरे साहिं  
 न मैं माण निमाणी  
 अरदास कारंव प्रभु अपने आगे  
 सुन २ जीवा तेरा वाणी

तूद चित आवे महा आनन्दा  
 जिस विसरे सो मर जाई  
 दमाल होवे जिस ऊपर कारते  
 सो तुद सदा ध्यावे

यरण चूल तेरे जन की होवा  
 तेरे दर्शन सो बल जाई  
 अमृत वचन हृदय उर धारी  
 त्युं कृपा ते संग पाई

अन्तर की गत तुद पे सारी  
 तुद जेवड और न कोई  
 जिसनु लाहे लटे सो लगे  
 भगत तुम्हारा स्तोई

दोई कर जोड़े माँ इकुदाणा  
 सो साहिब तुदे पावा,  
 स्वास २ नानक आराप्पे  
 आठई पहर गुण गावा

28

July  
Friday

186

1989

मुझे और कृष्ण नहीं चाहिए  
तेरे चरणों में मैं लगा रहूँ

जो भला किसी का न कर सक  
तो बुरा किसी का न हो करी  
बस इक घरी मेरी कामना  
तेरे चरणों में मैं घुणा रहूँ

मुझे अपना दुख तिल भर लगो  
ओरो का दुख आपना लंगे  
परवर दिगार दया करो  
जो मैं हर किसी की दतावन्

मुझे अपनी भक्ति रंग में  
प्रभु अपना मुझ को रंग दे  
तेरी भक्ति हो मेरी जिन्दगी  
इस दिल से न मैं जुदा करो

जेरी वासनाओं को तोड़ दो  
जीवन में रेसा मोड़ दो  
तेरे नाम का सिमरण सदा  
हर पल द्यड़ी मैं विद्या करो

तेरे सन्तोका सदा साथ हो  
मेरे सर पर तेरा हाथ हो  
तेरे नाम का असृत सदा  
तेरे भक्तों से मैं पीया करो

187

July

Saturday

1989

29

मेरुबाँ मेरुबों सतगुरु मेरा मेरुब  
सकल जगत को देवे शान सतगुरु - - -  
तं सतगुरु हो तुम्हरा चेला  
बड़े भाष्य होगा तुम संग मेला

जब से मैं आपा शरण तिहारी  
तब से मैंने पहिं नजर निहारी  
आपा मैं सुनन मनन की वारी  
पापा मैंने सतगुरु पूर्ण कहावानी

सतगुरु ने मेरी छाप्ति सर्वारी  
सतगुरु ने मेरी हो जी भारी  
दुख नठि सुख सहज समाए  
आनन्द भया तुद शरणी आए

काम क्रोध लोभ मोह मन हर लीना  
बन्धन काट मुक्त गुरु कीन्हा  
भूले मार्ग जिस बंतलाघा  
रेसा गुरु बड़े भागी पापा

मान अपमान दोऊ समकर मनि 05.0001  
तन मन मेरा मेरे सतगुरु ठवाले  
सतगुरु मेरा बड़ा समरपा  
शान्त भई मेरा दुख शगलथा

31

188

July  
Monday

मेरे सतगुरु ने मुझे राजा बना दिया  
खोला जो रवजाना क्तानका महाराजा बना दिया।

राज की वाणी चुनू के  
सतगुरु ने माला बनाई  
आत्म डोर में बुन के  
हर जिकासु को पहनाई  
आनन्द का हर रोम २ में  
दरमा बहा दिया

पाँचो ही विकारों की  
सतगुरु ने युक्ति बताई  
द्वैत का काजल चोष्ट के फिर  
सब आत्म धृष्टि बनाई  
भाग्य का है रेवेल तमाशा  
साफ थे दिरका देया

मारा जाहू ही अपना है  
हेरे मोती क्या करने  
अकानी थे हम अब तक  
हीते थे माया में मरने  
जौत हृष्टि अकानी की  
क्तानी मुझे बना दिया  
होगी थे भी कृपा गुरु की  
हम आत्म गें रह लेंगे  
जब तक प्राण रहे तज में  
हृसं के सब दुश्व सह लेंगे  
बालक है भगवान के हम  
भगवान से मिला दिया  
भीढ़ मे गहरी हम को जगाया → →

1989

189

August  
Tuesday

1

1989

मन अंपना हीं कुछन मुरारी बन गया  
जदो प्रेम ओदे विच इकतारी बन गया

काम क्रोध नु भारे लोभ मोह नु सधावे  
पर्दा खुदी दा उठावे ता बनवारी बन गया

राम द्वेष नु भगवे सारे अम गिटावे  
प्रीत नाल ओदे लावे ता गिरधारी बन गया

माता ममता नु भारे आशा नारी सुधारे  
त्वृष्णा बहन नु विचारे तां बनवारी बन गया

जेडा हरि नु स्धावे हरि रूप बन जावे  
सन्त आनन्द भनावे तां दरवारी बन गया

→ → → → → → → → → → → → → → → →

→ राजाई दिरक्लाने

जन्मों से जो भूले थे

उस ज्योत को फिर सेजगाने

तज आत्मा का हम तो सजाके  
तरकत थे बिठा दिया

190

August  
Wednesday

1989

धेर दिल है अमानत सतगुरु की  
दर पर तेर रखाया नहीं जादा

असी कीते कोल निभावागे

असी चीर के नदिया आवागे

असी अपना चीर मनावागे

सातो ज़गत मनाया नहीं जादा

असी दुनियां कोलो लेगाने हुए  
असी सोनी शाड़ा दे परवाने हुए  
सतगुरु चरण दे दीवाने हुए  
सातो कदग हटाया नहीं जादा

सानू दुनियां कोलो डर केड़ा

साडा सतगुरु बाज़ो दर टोड़ा

असी गुरु चरण विचताया डेरा

सातो चार घुपाया नहीं जादा

असी दुनियां कोलो निराश हुए  
असी गुरु वचना दे दीवाने हुए  
सतगुरु बाजो उठास हुए  
सातो भेद घुपाया नहीं जादा

191

August  
Thursday

3

1989

मह भेद सनम मुझे आज मिला  
त और नहीं मैं और नहीं बलभवी आवाज़

जब दिल में तेरी उत्तरक पड़ी  
जो वहम हुआ था दूर हुआ  
अब तक ही त्रहै दिल जे बसा - त

कलियों को सुना के गुल जे जहा  
मैं तुम्ह में छिपा था पहले से  
तू न मुझ से जुदा गैं ना तुम से जुदा

दरिया के जोश से जौज उठी  
वह उलट के सागर से जहनोत्तरी  
मैं तुम्ह से हुई और तुम में पाना

मैं कस्तूरी हूँ तू खशबू उराएं  
मैं बीजा हूँ तू रह उसाएं  
मैं कण हूँ तू जलवा नुगा

था दिल में जो पर्दा गफालत था  
वह भोज के दृश्य से दूर हुआ  
फिर राम सनाम से कहेन लागा  
तू और नहीं गैं और नहीं

4

August  
Friday

192

1989

थे गर्व भरा मस्तक, मेरा  
हरि-चरण घूलतक छुकनेदो  
अहंकार विकार भरे मन को  
निज नाम की मालाजपनेदो

मैं मन की मैल को धोन सका  
थे जीवन तेरा हो न सका  
मैं प्रेम में इतना रवोन सका  
जो गिर भी जो पड़ तो उठनेदो

मैं अद्वान की बातों में रवोभा  
और कर्महीन पड़ कर सोभा  
जब आरंव रखुली तो मन रोया  
जग सोए और मुझ को जगनेदो

कैसा भी हूँ मैं रवोटाभा रवरा  
फिर भी तो शरण में आ ही गया  
इक बार तो जाह दो रवाली जा  
जा तो प्रीत की रीत खुलकनेदो

①

193

August  
Saturday

1989

5

थे महोब्बत की बोते हैं उप्पो  
बन्दगी मेरे वश की जहीं हैं  
महां सरदे के होते हैं सौंदे  
आशकी इतनी सस्ती नहीं हैं

इश्क वालों ने कब वक्त देरवा  
तेरी पूजा में पाबन्दियाँ हैं  
महों दम शे होती हैं पूजा  
सर उठाने की फुरसत नहीं है

आज दिल से जो मस्ती में झूँके  
होशा कब है उन्हें जिन्दगी का  
जो चढ़ती उतरती है मस्ती  
वो हकीकत मैं मस्ती नहीं है

धर्हा जास बन्दे रोज पीना  
मस्तो वा यही है कहना  
प्यार से जो एक बार पी ले  
वो उमर भर उतरती नहीं है

6 Sunday

वो नजर क्या जमाने को देरवे  
जिसकी नजरों में मालिक समाधा  
जो नजर देरव लेती है उसको  
वो नजर फिर तरसती नहीं है

194

August  
Monday

7) मेरे मत कहाँ से पाई सापो  
बन्ध मोहर की कालाना भिटाई सापो

दृष्टा द्रश्न द्रश्य जिपुठी से न्यारा हूँ  
सब कुछ मैं ही करने हारा हूँ  
गुरु ने मेरे मत अताई सापो

मैं आत्म कहन लखाया गुरा ने  
वेदा विचो सार पिलाया गुरा ने  
पी के मैंता होइया निहाल मेरे सापो

सतगुरु की सगंत प्यारे अजब निराली है  
दो ही सगंत करसी जिसने आहंता ममता गारी है  
अलख निरजन अविनाशी सापो

195

राम रस बरसे रे मनवा राम रस बरसे  
और मन मुरव्ववर्षों तरसे रे मनवा राम रस बरसे

खूं खूं मेंदया हरि की बरसे अन्धर से  
तु क्यों रवझ उस झोटु मैं पागले भीगलकेडरसे

काम क्रोध मदलोभ मोह का धन हटा सर से  
प्रभ नीर मैं भीग बावर अन्धर बाहर से

बृथा डोल रही वन 2 मैं रतोजत दर 2 रे  
मन मन्दिर में राम वसे हैं तो न भरण पर

1989

196

August  
Tuesday

1989

मेरे तज मन जीवन सुलग उठे  
ओई ऐसी आगलगा दे रे  
दिन दूना हो विरह वेदना  
पल भर थैन न आए रे

ऐसी लो हरि नाम की लागी रे रह न जाए मेरा नाम  
मन वाणी से तुझे पुकास्त तन से हो हरि गमित कमाम  
हरि का हो सो रह जाए और मेरा सब जल जाए रे

जीवन पथ पर थका है राही जार्ग चला नहीं जाता  
एक तरफ जग एक तरफ प्रभु गुरु से चुना नहीं जाता  
हाथ पकड़ कोई सुभ अन्धे को प्रभु की ओर गुरकरे

जीवन की इस कठिन छगर में तुम्हें पुकास्त दीनानस्य  
बड़े कठिन साधन से पाया अब ज छोड़ तेरा हाथ  
चाहे दुनिया को रंगी है निर्देष चे दोष लगाए रे

मुझे पर्वत बनाना पसन्द नहीं अग्रान मान हरत्ने मेरा  
मैं ऐमन्नगर का वासी हूँ गुणकान द्यान हरत्ने मेरा  
रपरती के आचंल पर मेरी रारव बिरक्ती जाए रे

August  
Wednesday

ये अस्त्रेर कमा हैं अजब अनोरवी १९८९  
 के राम मुझमें मैं राम मैं हूँ  
 बगेर सूरत अजब है जलवा  
 के राम मुझमें मैं राम मैं हूँ

मुखकार हुस्नो इश्क हूँ मैं  
 मुझी मैं जाजो नेयाज स्वर है  
 हूँ अपनी सूरत पे आप दीदा केराम  
 जमाना आइना (ए) राम का है  
 हर स्क सूरत से है वो पैदा  
 जो चब्मे हक बी खुली तो देरा

तो गुम्फ से हर रंग मैं जिला है  
 कि गुत से बू भी कभी भुदा है  
 हुबाबो दरिया का है तमामा  
 सबब बताऊँ मैं क्यद्द का क्या  
 है क्या जो दर पर्दा देरवता हूँ  
 समदा ये हर साज से हैं पैदा

बसा है दिल मैं मेरे वो फिलतर  
 है आइना मैं खुद आइनागर  
 अजब तहस्सुर हुआ है कैसा  
 मुकाम पुढ़ो तो लामकों था  
 ना राम ही धान मैं वहाँ था  
 लिया जो करवट तो होश आया

अलल तवानुर हैं पाक जलवा  
 के फिल बना तुर्र वर्के सीना  
 तड़प के फिल थु पुकार उठा और  
 जहाज दरिया मैं दरिया अहाज मैं  
 तो दैरिये आज  
 ये जिस्म चिह्नती है राम दरिया  
 है राम छुम्जे मैं राम गे हूँ

August  
Thursday

1989

ये मस्तो की महाफिल मैं आकरतो १०८  
 जरा खुदी को अपनी भिटा कर तो देरवो

भुलेंगे जब्तो मापा के सारे  
 जरा गीत प्रेम के गाकर तो देरवो

बैठा है तेरे दिल मैं ओ प्रेमी  
 जरा सिर को अपना झुका कर तो देरवो

लहरे ये बन जाएगी किनारे  
 तुफा से जरा टकरा कर तो देरवो

खुलेंगे अण्डारे आनन्द के तेरे  
 सतगुरु को अपना बनाकर तो देरवो

चढ़ती यहाँ पर है नाम खुभारी  
 हुस्न सच की महाफिल मैं आकरतो देरवो

२११  
 १- ये रथ मेरा, मैं राजा हूँ, बड़ी शान से जीवन सेरकर  
 ये इंद्रियाँ हैं दोड़, गलत नहीं दोड़  
 लगाम मैंने टाहों मैं पकड़ी हूँ  
 मैं मन बुही हूँ का साक्षी हूँ  
 बड़ी शान से जीवन सेर कर - ...

२- मैं राजा इसंतन का,  
 जीवन के चमचा का,  
 यटों तो सदा ही बहारें हैं  
 जहाँ जाऊँ, खुशी पाऊँ, बड़ी शान से जीवन सेर कर

11

August  
Friday

199

ये जग दीवानों की वस्ती  
देरवा सोच विचार  
देरवा पागल सब संसार, देरवा -

कोई देरवा धन का पागल  
पूजा करता धन की  
धन कारण सब चैन गवाँ  
शान्ति तज दी मन की सुजेखी  
लारव २ कर माया जोड़ी  
जोड़ २ गमा हार  
कोई देरवा रूप का पागल  
ओवन का गतवाला  
पल २ जारू बीत जवानी  
ओवन ये ढल जाना, सुनो  
जिस ओवन का मान करे  
उस ओवन वे, दिन चार

कोई देरवा सुख का पागल  
सुख २ करता जाए  
हरि भजन बिन सुख न आए  
मांगे हाथ न आए  
जो सुख आए फिरना जाए  
उसका नहीं विचार  
हरि भक्त २ पी पागल देरो  
गोविन्द वे, गतवाले  
पिस्य छारे खेम एयाले  
बैठे जगत बिसोरे  
मैं मांगू तो ही पागल पन  
उतरे नहीं रुमार

1989

200

August  
Saturday

12

1989

यह जन्म तुम्हे अनगोल गिला  
चहे जो इस से कमा बाबा  
चौथे दीन कमा चुंहु खनियों कागा  
चौथे हरि के हेत लगा बाबा

जब हाथ पसरे जाएगा  
बिन श्रोक कुंद्र हाथ न आएगा  
सर पटके गा पछताएगा  
अभी ही से राम मना जाना

क्षुं गप कर्म की रवेप भरी  
तू हल्का सिर भारी गठरी  
अट पटक तू सिर से विषय गगरी  
ओर हल्के २ जा जाना

यहाँ दो दिन वो तू आया है  
किस बिरते चे दृष्टि द्याया है  
भृ भ्रम जातु सब माया है  
इस से न दिल तू लगा बाबा

जो देता है वो लता है  
सो रकोता है वो पाता है  
प्रहाँ नगदी वे नगदी सोदा है  
जो आया है सो गया बोदा

शाहनश्वाह राम दुहाड़ है  
बिन हरि न कोई सहाइ है  
ला चिन्ता चेसे पाई है  
सब यही रहेगा चपरा बाबा

14

201

August  
Monday

1989

रमता राम रमो मोरे जिथा  
ज्ञानी ने गुप्त रवजाना पाहीलिया

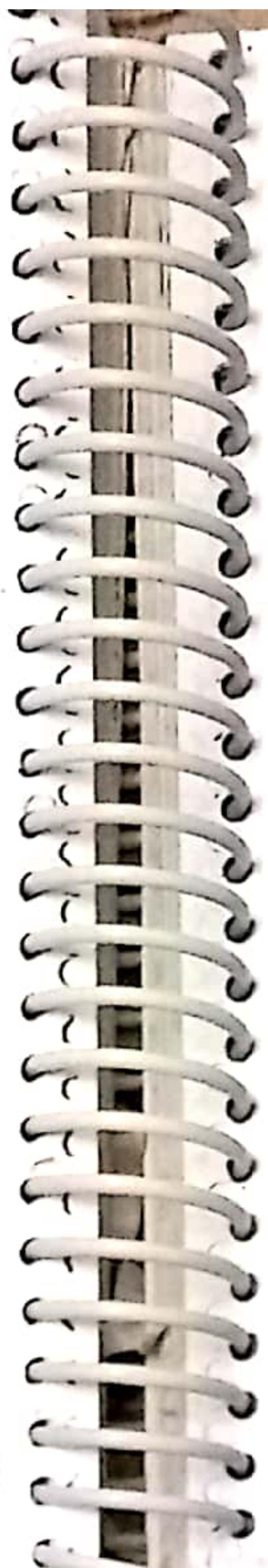
चतुष्ट साधन पलंग विद्याया  
कौल ज्ञान का तकिया लड़ाया  
श्रान्ति का विस्तर विद्यालिया

ऐसी गंहरी नींदरि आई  
जगत महल न रहयो द्विघाई  
अद्वैत राम पति वर लिया

जाग्रत सुपन सुषोप्त उर्पिय  
हम तो अद्वैत अरवणु अनादि  
इस निश्चय को मैनें जगा लिया

जा कोई धेरी मिज हमारे  
जित वल देखा उत्कल प्यारे  
कर निर्णय मैनें आजमा लिया

ज्यों सागर में बूँद बर्माई  
सतं राम में भेद न भाई  
बुरु शवित में गन को अटका लिया



202

August  
Tuesday

15

1989

रिमझिम वरसे अमृत च्यारा  
मन पीवे सुन शब्द विचारा

सब कुछ पर में लाहिर कछु नाहीं  
बाहिर डोले सो भ्रम भुलाई  
गुरु प्रसादि, जिन अन्दर जानिया  
सो अन्दर बाहर सुहेला जियो

आनन्द विनोद रहे दिन रति  
सदा २ हरि केला जियो  
जन्म २ का विष्ठा मिलया  
साध कृपा ते सुखा हरिया  
सुमाति पाई नाम द्यियाई  
द्युषि गुरु मुरक होवे गेला जियो

जल तरंग ज्यों जल ही सगाया  
त्यों ज्योति संग ज्योत मिलाया  
कोहे नानक भग वाटे इकछारा  
बहरि न होवे चोला जियो

16

203

August  
Wednesday

1989

स्वक स्वका न गैंजमाना देरवता हीरहण्ण

- यह जहान मेरा तभाषा देरवता - - -  
 ↳ प्रागेन गाला उठा और उठ के चल दिया  
     सोने वाला मीठा सपना देरवता - - -  
 ↳ ट्याग से बन्धन कटा और हो गया आजाद मन  
     लोभ धन का कैद रवाना देरवता - - -  
 ↳ जीने वाला जिन्दगी को दे के जीना पा गया  
     मरने वाला जीना मरना देरवता - - -  
 ↳ हम किनारे का सहारा ले चले तुफान से  
     दूर से कोई किनारा देरवता - - -  
 ↳ बात जो अच्छी लगी हज तो लेकर चल दि  
     कोई जातों का खुलासा देरवता ही रह गया।  
 ↳ हमने प्रेम का बाना लुगा और सी लिया  
     कोई जग का ताना लाना देरवता - - -  
 ↳ जिंदा जिंद पिली में दिल हो रहा अपना जबान  
     फिक्र में कोई बुढ़ापा देरवता - - -  
 ↳ हमने मजिल को पाने आगे बनाई गंती  
     कोई अपना घर पुराना देरवता - - -  
 ↳ जिन्दगी लाई गुमों में जिन्दगी की लौकता  
     जिन्दगी को देने वाला देरवता - - -

904

August  
Thursday

17

1989

राम नाम की नैया लेकर सतगुरु को भेजा  
 आओ मेरी नैया में ले जाऊँगा भव पार

- इस नैया में जो कोई चढ़ जाएगा  
     जन्म २ का पाप सभी खुल जाएगा  
     कटे चौरासी के बन्धन और पड़भग्न की मार  
     पाप गठरिया सीस घेरे कैसे आऊँ मैं  
     अपने ही अवगुण से खुद शर्माऊँ मैं  
     नैया तेरी साँची भगवन मेरे पाप हजार  
     जीवन अपना सौंप दो मेरे हाथों मैं  
     स्वास २ को पोत द्वा मेरी यादों मैं  
     पाप पुण्य का बन कर आया मैं तेरा ठेकेदा  
     करके दया सतगुरु ने चुनाइया रंग डाली  
     जन्म २ की मैली चादर रंगी डाली  
     दाग पड़ी थी मेरी चुनरिया कर दिया तत्त्वों  
     बड़े भाग्य से सतगुरु जी का कान मिला  
     गुम्फ दुश्मियों को जीने का आधार गिरा  
     लड़ी झुबने बीच गवरंगे मैं आ गया रवेतन

18

१८०

August  
Friday

1989

रहमंता करदा स्त झोलिया भरदा स्त  
पीरा दा पीर मेरा शाही फकीर मेरा सत्यरुख  
च्यारा स्त

जो इसदी शारणी आये कार देदों गालों ग्राल  
तुरी लुट लो मौज बहारा है खेसा दीनदयाल  
के शरणी आजाओ भूला बरव्वा जाओ

मेरा रब है खेसा स्तन्या इसे समझे ना कोई कहा  
मिन्ता दें तिच कटांदा चौरासी वाला फन्दा  
देर न लांदा स्त पाप मिटांदा स्त

मेरे सत्यरुख जी के द्वारे जेडा आके अजी गुजारे  
ओ खेमियों मैं वाहंदी मुहँ मियां मुरादापोवे  
सारे कहंदे ने भेरे भण्डारे ने

२०६

August  
Saturday

19

1989

राम रस बरसे ओरी आज मेरे अगँवँड़ा भेर--  
भ्रेम रस बरसे ओरी "

जाग गए सब सोए सापने ०  
सभी पराये हो गए अपने  
लगे खेम की माला जपने - -  
ख्रेमरस ढरवे ओरी - -

धरती नांची अब्कर नांचा  
आज देवता भी है नांचा  
मैं नांची जग सारा नांचा - अगं २ हरबे ओरी -  
श्रम रस बरसे ओरी

युग २ के ये नैन तिसाए  
आज सरवी पिया घर में आए  
कहौं बैठाऊं जोहे समझनु आए  
ठौर कोई कर लियो री -

छुपक २ मेरी पायल बाजे  
अगल बगल मेरे राम विराजे  
खेमी को तो प्रीत ही साजे  
बहुत दिन तरसे ओरी

खुक गई रात खुका है चदा  
साथो गगल गौज आहुजङ्ग  
तू निर्देष अरे च्यों बन्दा  
व्यडी दस बरसो री - -

21

August  
Monday

207

1989

लगान सतगुरु से लगा भैठे  
 जो होगा देखा जाएगा  
 उन्हें अपना बना बैठे  
 जो होगा देखा जाएगा

कभी दुनियाँ से डरते थे  
 कि धूप व पार करते थे  
 कि अब पर्दा उठा बैठे, जो--

लिए॥ कुर्बान उपना फिल  
 प्रभु के कोमल वचनों जैसे  
 जन्म की बाजी लगा बैठे

तुझारी बेकसो से फिल  
 जो मेरा दूट जाएगा  
 रहेंगे हम न इस तन में

तुझारी लगान लगा करके  
 अनेको पापी तरते हैं  
 कदम आगे बढ़ा बैठे

माया के जाल में पास कर  
 अनेको जन्म लीते हैं  
 कि अब वन्धन छुड़ा बैठे  
 जो होगा देखा जाएगा

208

August  
Tuesday

1989

22

लूट लो जिसका जी-चाटे  
 भैंशोर मचौंड़ गली गली  
 हरि-नाम के हीरे मोती  
 भैं बिरवराऊं गली गली

जिस वे यह हीदे लूटे  
 वो तो माला माल हुए  
 इस जग के जो बने पुजारी  
 आखिर वो कांगाल हुए  
 घन दौलत और मायावलो  
 लुम्हे जगाऊं गली गली

जब तक आगा है दुनियाँ की  
 तब तक है पहचान नहीं  
 राम व मैं जो राम न जाने  
 हैं वो द्वन्द्वान नहीं  
 राम कृष्ण और नानक का  
 इतिहास सुनाऊं गली गली

जिस जिस जे ले लिया सहारा  
 उसका तो उहार हुआ  
 सब में देखा प्रभु को निसजे  
 उसका बोडा पार हुआ  
 सच्ची कहानी गा व कर  
 सब वो सुनाऊं गली गली

23

August  
Wednesday

१०९

1989

लीलालगी ऐ राम भजन वालीजै हो  
लीला लगी ऐ प्रेम भजन वालीजै हो

माता कहंदी सुन मेरी मीरा ऐ की चाली चाई  
महल माड़िया घोड़ के सन्तन कुटिया पाई  
मीरा कहंदी सुन मेरी माता ऐ कुटिया मैंनु भावे  
इस कुटिया विच रहंदिया मेरा ईयाम सुन्दर ओवे

माता कहंदी सुन मेरी मीरा ऐ की चाली चाई  
झीरे मोती घाड़ के गल तुलसी गाला पाई  
मीरा कहंदी सुन मेरी माता तुलसी मालाचंग  
तुलसी माला पादिया मेरा ईयाम सुन्दर संगी

माता कहंदी सुन मेरी मीरा ऐ की चाली चाई  
सूट स्पाडिया घोड़ के अंग विभुति लाई  
मीरा कहंदी सुन मेरी माता अंग विभुतिपंगी  
अंग विभुति लादिया मेरा ईयाम सुन्दर संगी

माता कहंदी सुन मेरी मीरा ऐ की चाली चाई  
अपना पति छोड़ के मोहन नाल प्रीतलगाई  
मीरा कहंदी सुन मेरी माता ऐ पति गेरा गूण  
सन्दचा पति मेरा ईयाम सुन्दर सच्चे रसेलांदा

आकाशा ते विमान ऐ उत्तेरे माता बिट२ तके  
मीरा जा बैकुण्ठ जू पहुँची  
माता छुलगे धके

११०

१०१

1989

लोकवासनाओं का मेरा सपना ध्वसत  
वित रेसा टृप्ट हुआ है

फंसे हुए थे इसमें ससार की गोह माया थे  
शानि भिली भगवान के चरणों की श्रीतल धापा में  
सतगुरु मिले तो अब मुक्ति का बन्दोबस्तु हुआ है

सोते २ रुक जन्म का काल अनन्त विताए  
इतने थे विराज हुए कोई आकर हमें जगाए  
सतगुरु मिले तो जगता आई चेतन चुस्त हुआ है

खोये २ से फिरते थे सशंघ की गलियों में  
मृग तृष्णा के पासे तड़फ रहे थे मरुस्थलियों में  
सतगुरु मिले ज्ञान रस पीकर मन अनमस्त हुआ

हर्ष शोकनहीं त्याग ग्रहण कृद्ध भीतो याद नहीं है  
बैठे हैं भगवान वे संग जग की परवाह नहीं है  
अब चेतन्य सकल कर्मों से बिल्कुल मुक्त हुआ  
है।

21

25) August Friday

1989

लखाया गुरु ने मुझ में ही मेरा प्यारा  
मुझ में ही मेरा प्यारा राम-२ राम

दूंड़ फिरी प्रीतम घ्यारे को नदी जांल और बांगों में  
सरधू मान सरोवर में और गगांजमना काढ़ी में  
बड़े २ भार निर्भर में २ लाड २ भरवारे में  
वन उपवन प्लूलों कलियों में चन्दा और सितरों में  
नहीं पाया निज प्याम

मन्दिर २ मस्जिद २ मैं जा २ करं ध्यान किया  
कीणा के सहतारो से गद २ होकर सहगान किया  
दूंड़ २ जल दूंड़ थका तब सन्तों का सत्सग किया  
बिन सतगुर राम नहीं मिलते सन्तों ने उपदेश  
तब आया विश्वास

ससांर का दुर्घ सब झूठा है गुरु वर ने हमें बताया  
सोहम २ गजिना कर सारा भेद भेद बताया है  
सब कर्मों का तू द्रष्टा है एक ही राज बताया है  
माया का पर्दा दूर हुता घट में ही राम लखाया है  
तब पाया विज्ञाम

212

1989 August Saturday

26

वैसे तो नबो अनेक हैं  
पर यह नदा कुछ और है  
साकी जो पिलाए इक बार जिसे  
रहता है सदा रखुमार उसे

जीवन में वही रुक्षा रह सकता है  
वचनों को जो अमल में लाता है  
गुरु भक्त वही कहलाता है  
निष्काम जो करके दिखाता है  
इक पल का अब तो भरोसा नहीं  
समय को न यूँही गवाना है

इस राह में आने वाले को  
अपनी ही लगान की जरूरत है  
दुनियाँ की जिसको नहा नहीं  
राहों में उसके स्कालट नहीं  
जीते जी यहाँ तो मरना है  
अपनी ही रुद्धि जो मिटाना है

275.00

28

August  
Monday

1989

मोजुबाकहौं सेलाऊं जिससे काँसे नैं शुक्रिंगा

तूने किया है सेसाजादू भेश होश भूला दिया है  
पिला के अमृत रस का प्पाला इसे बना दिया है

कितने न छुरे थे हम तो तूने फिर भी उठा लिया है  
कितने काष्ट सह कर भी शुभे आपना बना लिया है

मेरे जन्म २ के साथी मैंने अब तो तूके पहचाना  
खुद कृष्ण बन के मुझे अर्जुन बना दिया है

ब्रेगमपुर का लायक्षा हूं तूने हमको बना दिया है  
तारके आत्मकान की वर्षा मुझे बना दिया है

मेरी नींद चुराने वाले अब कैसे होश संभलू  
दो कलम नहीं हैं मिलती जिससे शुग्राना लिखड़लू

मेरा जन्म मरण मिटाने वाले अब कैसे तूमें भुलाऊं  
दिल दिया जो मैंने तुम्हाको अब कैसे २ बैठाऊं

24

1989

- वेदों के मीठे वाक्य हैं सुनलो प्पार  
- दुई का नाश होता है आत्म विचार से

मंजिल तो तेरी दूर है जाना जरूर है  
तन मन में शक्ति भरलो और विचार से

कल विचार किजिसे फिर जगत है कहां  
जगत दिखाई देता है भ्रम के आधार से

मुरति माता की गोद में जब रवेलते थे हम  
माता प्पार करती है अच्छे आचार से

25

विषयों के राहीं आके रुकजा, तुम्हें चोला मिला इस्तु  
मिलेगा इसी में तुम्हें वाक्वे, युपा द्वारा राज भू का

कदर इस चोले की मीरा बाई ने जानी है,  
इस जहर प्पाले में द्विधि घ्रेमकहानी है  
जे नजारा हरि के नाम का, तुम्हें

गन्धिर में तू जाता है अपना सीसा गुकाने को  
रख कर छोटा पैसा भव से तर जाने को  
जो तो चाहता है घिल की सपाई को तो हो भ्रवां  
तेरे दास का

इस राह पे चला रावण देरदो अजब नजारा है  
मरते ही समय उसका कोई न सहारा है  
जो तो जलता रहा हर साल में, पुरतला उसी के  
भर्तमाल का

29

August  
Tuesday

29

30

August  
Wednesday

216

शाम तुम होगे शागा  
काफ़र हो जाऊँगा तो

मैं अगर मांगूं तो गांगूं  
तुमना कुद्द देना मुझे जी..  
तरना प्रेसी नहीं मजदूर हो जाऊँगा तो

मैं अगर धाँहूं तो धाँहूं  
तुमन न मुझ को धाहना जी  
तुमने अगर चाहा तो फिर मगरनर हो जाऊँगा मैं

मैं अगर देखूं तो देखूं  
तुमन न मुझ को देखना जी  
तुमने अगर देखा तो फिर मजदूर हो जाऊँगा मैं

मैं अगर तड़फूं तो तड़फूं  
आस्तूं बरसाना ना तुम जी  
वरना आरंबो से तेरे जी दूर हो जाऊँगा मैं

1989

217

August  
Thursday

31

शान्ति सरोवर में नहाया करो जरा शान्ति  
शान्ति समान कोई जप भी नहीं है

चाहे माला चे माला फिराया करो जरा शान्ति

शान्ति समान कोई तप भी नहीं है  
चाहे सारी रातों समाप्ति लगाया करो जरा शान्ति

शान्ति समान कोई स्नान भी नहीं है  
चाहे गंगा और यमुना नहारा करो " "

शान्ति समान कोई पाठ भी नहीं है  
चाहे चारों ही वेदों को गाया करो " "

शान्ति समान कोई दान भी नहीं है  
चाहे लारकों रूपया लुटाया करो " "

शान्ति समान कोई तीर्थ भी नहीं है  
चाहे चारों ही धारों में जाया करो " "

काहत कबीर सुनो भई साथे  
मन को हरि चरणों में लगाया करो " "

1

218

September  
Friday

1989

शक्ति द्वास्ती है वितनी मेरी आत्मा  
आत्मा में मिला भूम् को परमात्मा

आत्मा तो कभी भी ये मरता नहीं  
जा चे कटता ना जलता ना गलता कभी  
देह कारण से चोला बदलता रहा २  
आठ तो कभी भी बदलता नहीं  
आत्मा के लिए है खुला आसमान

आत्मा में कोई क्लेश होता नहीं  
राग होता नहीं दृष्टि होता नहीं  
देह कारण ही नाम और रूप है २  
आत्मा का कोई वेष होता नहीं  
आत्मा में नहीं कोई कालिमा

आत्मा में नहीं भेद होता कभी  
जा चे सोता कभी ना चे रखोता कभी  
देह कारण से लगता साति बोझ है २  
आत्मा तो कोई बोझ ढोता नहीं  
आत्मा में किया गम का रवात्मा

आत्मा में जा होता कभी चुद्ध है  
ये अजर है असर है परम शुद्ध है  
देह मिटते ही आघागमन मिट गया २  
आठ मुक्त है ये परम शुद्ध है  
आत्मा में भरी बान की लालिमा

0

219

September  
Saturday

1989

- सपाल हुआ है उसीकी जयिन  
- जो तेरे चरणों में आ चूके हैं ७

- न पापा तुम को भरीब बन के  
न पापा तुम को अभीर बन के  
उन्हीं की पूजा है पूर्ण  
जो तेरे चरणों में आ जाचूके हैं

जहाँ भी जिसने तुम्हें प्रकारा  
दिया है तुने उसे स्थारा  
करे है उनके दुर्वों के बन्धन

होशियार बन के तुम्हीं को रखोआ  
अन्जान बन के एक रात रोआ  
अपने को रखोकर तुम्हीं को पापा  
में तेरे चरणों में आ आपूका है

3 Sunday

4

२२०

September

Monday

1989

साथ्यो सहज सागारी भवी  
गुरु कृपा जहाँ दिलते लागी  
दिज व अधिकर चली

जहाँ र डोलु जोँड़ सो परिक्षण  
जो कुछ करन सो सेवा  
जब सोऊ तब करूँ दण्डवत  
पूज और न देवा

आरंभ न मुन्द्र कानं न रुन्द्र  
टनिक उष्ट नहीं पाऊँ  
खुले जघन पहचानु हरा  
मुन्द्रर रूप निहास

कुँ सो नाम सुनु सो भवण  
रवाऊँ पीज़ सो प्रजा  
गह उजाड़ सक सग देवय  
भाव मिठाऊँ दुजा

शब्द निरन्तर से मन लागा  
मलिन वासना त्यागी  
उठत बैठत कबहु न बुटे  
रेसी तारी लागी

कहत कबीर थे अण्णापी रहवी  
सो प्रगट कर गाई  
सुख दुरव सोनोपरे दरज पटे  
उस पर रह्यो समाई

२२१

September  
Tuesday

5

1989

सतगुर बिन जो हरि गिल जाए  
पूरे गुरु दिन जो हरि गिल जाए  
हरि मिलने पर भी छस मन का  
भेद भ्रम नहीं जाए

वो तो है माया पति नटवर  
माया में हृषीये  
जीव जगत की स्वना करके  
सबको नाच नचाए

सुख के हेतु सब अटक रहे हैं  
भव बन्धन हट जाए  
ज्ञान बिना आनन्द कहाँ है  
गुरु बिन ज्ञान न पाए

भाघ बड़े जब हरि सतगुर बन  
जीवन में आ जाए  
जीव ब्रह्म की सकता करके  
सत्ता स्वरूप लरवाए

जीवन लुक्त तभी हो प्राणी  
जब सतगुर अपनाए  
कहे खेसी गुरु कृपा प्रथम हो  
किर हरि द्वपान लगाए

२२२

September  
Wednesday

19८९

सुना है एक सौदागर आया  
बेचे सुन्दर लाल सरवी  
वर २ जावे अलरव जगावे  
शुद्ध है लाल गुलाल सरवी

मैं भी लाल रवरीद के लाउँ  
आया मन में रघपति सरवी  
जो कोई लाल उमोलक चाहे  
ले जाए तत्काल सरवी

जाकर अर्ज भे भेने किन्ही  
रबोलो लाल रुमाल सरवी  
छट ही उसने चे कह दिन्हा  
चे हैं महंगा गाल सरवी  
इसकी कीमत दे न सकेत्रु  
गृहा करे सवाल सरवी  
तुझ को कटर ना लाल की प्यारी  
कितने बीते साल सरवी -  
सीस अपना भेट चढ़ावे तब  
पावे घह लाल सरवी  
बात रुन भेने सौदा किन्हा  
मैं तो भया निहाल सरवी  
प्रेमानन्द जो सिर देने से गिले  
बे सस्ता भाल सरवी

२२३

September  
Thursday

7

19८९

साथो सो सतहरु मोहे आवे  
सत्प नाम का भर २ प्याला, प्रेमनाम -  
आप पिवे और मोहे पिलावे  
मेले जाए ना महन्त कहावे, पूजा भेट न ले  
माया के सुख दुख वर जाने, संग ना सुपनचत  
पर्दा दूर करे आरंबों का, अंहा का दर्द द्विरवावे  
जाके दर्शन साहिब तरसे, अनहृष्ट शब्द सुनावे

निश्चिन सत्संग में जो राचे, शब्द में सुरत समा  
कोहे कबीर ताको भय नाहीं, निर्भय पद बरसा

२२४

सुख सागर में आइके मत जाओ रे प्यासाए  
निज सुख निर्मल सोई पाए जो मन को मेड़े

उठ जग प्यारे कर आत्म मेला  
पी२ प्यारे थह अमृत प्याला

गफलत घोड़ कर सन्तन मेला  
आया है जग में त्रु ही ओकेला

रोज बहत है अमृत च्चारा  
तो भी प्यासा सकल ससारा

8

September  
Friday

225

1989

सतगुरु पूरे देव गिले  
 फिर दूजा देव मनाता नमू  
 आत्म रस लाले आत्म गिलगए  
 तन २ रवोजान जाता नमू

सतगुरु मेरे मैं सतगुरु की  
 वो और नहीं मैं और नहीं  
 जब यह निश्चय जान लिया  
 फिर और से प्रीत लगाता नमू

सतगुरु ने पूर्ण ज्ञान दिया  
 भव तरने का सामान दिया  
 फिर पीछी पुस्तक पढ़ो जो  
 लेगल्ब्रॉड ज्ञान लगाता नमू

सतगुरु शब्द सब पाट भीतर जों  
 सत्य शब्द प्रकाश हुआ  
 जन मनिधर ज्योत विराज रही  
 फिर दीपक और खलावा नमू

- सतगुरु - २ लोल लोर भनवा, इधर उधर गह लोल भनवा
- गज रमणी गोपाल जो - २,  
 गोती - २ लोल गोर भनवा - २, गाहु - २ रस जालता
- इल वाजा वी लोली जो है - २,
- CM नामस स लोल भोर भनवा - २, गंधुर - २
- दिल हे वर दिलन् भिलता है - २
- जान तराजु लोल गोर भनवा - २, गोठुर - २

226

September  
Saturday

9

1989

साप ले लो गुरु आगे बढ़ जाएंगे  
 वरना सम्भव है हम तो फिसल जाएंगे

राह चिकनी और पथरीली है  
 कांटों भाड़ी भरी और जहरीली है  
 हो सहारा गुरु वरना हम पास पाएंगे

भोग विषयों की उठती है इक श्लहर  
 मुझको उलझा डुखने चली बीच भवंर  
 हे दो पतवार हमें वरना पास जाएंगे

दुनियां कहती है द्वस ओर आ मौज ले  
 पर उपर घर्म कहता है गुरु डोड़ ले  
 जो कहोगे गुरु वैसे कर जाएंगे

सच कहती है जब २ गुनाहा हुमें  
 पाई दुनियां मगर ना पाया हुमें  
 बिन तुम्हारे बता हम कहाँ जाएंगे  
 वरना

- गुरु शुका गुरु भावि उमग लै - २, १०८.७८.  
 फिर जिधू दूसर लोल भोर भनवा - २, अनुष -

- जा गुरुगुरत ले जान भिल लै - २  
 जा जानेद लोल भोर भनवा - २  
 अनुष - अनुर रस लोल भोर भनवा - १

11

227

September  
Monday

1989

सतगुरु मिले मेरे सारे दुख बिसरे  
अन्तर वे, पट खुल गयो री

क्षान की ज्योत जलीं घट भीतर  
कोट कम्भि सब जल गयो री

बिन दीपक मेरे भयो उजाला  
तमिर जाने कहा नस गयो री

कोट भानु मेरे भया उजाला  
और ही रंग बदल गयो री

त्रिवेणी से चार बहत हैं  
अष्ट कगल दल रिवल गयो री

अठदस तीर्थ है घट भीतर  
आपस में सब रल मिल गयो री

गगन महँल से तर्हि होई  
अमृत के कुण्ड खुल गयो री

कहत कवीर सुनो अई साधो  
नूर से नूर जौ मिल गयो री

228

September  
Tuesday

12

1989

सतगुरु पिया मेरी रंग दे चुनरिया  
रंग दे चुनरिया रंग दे चुनरिया

आप रंगो चाहे मोल रंग दे  
प्रेम नगर की लागी हैं क्षरिया

लाल न रंग दे हरीन रंग दे  
ऐसी रंग दे ऐसी स्वामी की परिया

ऐसी रंगो जो रंग ना पूटे  
चोबी चोवे चाहे सारी उमरिया

धर्मदास की बिन कारजोड़ी  
ओढ़ के चुनरिया जैसे सामी की सेयरिया

बिना रंगो भें वर में न जाऊँगी  
बीत जाए चाहे सारी उमरिया

13

१२९

September  
Wednesday

1989

सोचने वाले ने सोच लिया है  
लिखने वाले जे लिख ही दिया है  
मुझे बन्दा तू बया सोचे

सोच करन से सोच है मुश्किल  
चुप रहने से चुप न रहे मन  
चाहे तू करते हजार घल रे

तो ही बनी जो राम बनाई  
चलना पड़े जैसे राम चलाई  
राजी रहो तू रजा ते मन रे

सन्त सच्चा त्रुभेकान सुनाए

सीधी राह बताए  
फिर तूने कभी ना उठाया बचन रे

इक दिन तुम्ह को चलना पड़ेगा  
द्योड जगत को चलना पड़ेगा  
फिर तूने कभी न किया भजन रे

230

September  
Thursday

1989

सतगुरु र्पारे ने कितना बचाया है  
हमने लगी जिन्दगी मन मुखुरापा है

दिन्य छाई देकर ऊंचेरा भिटाया है  
नजर नूरानी से स्वरका लरवाया है  
गिर गए ऐ हम गुरु ने बचाया है

अवगुण नहीं देखे गले से लगाया है  
अनमोल रवजाना देकर बादशाह बनाया है  
विषयों के कीचड़ में गिरने से बचाया है

मुरम्मामा मन का बगन गुरु ने खिलाया है  
भूल गए ऐ हमना गुरु ने हसाया है  
ससंगर सागर से गुरु ने तराया है

मन पर जन्मों से गफलत का धार्दा था  
दुर्द का पर्दा हटा कर नींद से जगाया है  
कैसे भूल रहमत तन मन-भमवाया है

14

15

231

September  
Friday

1989

स्सांसर ने जब कुकरामा  
तब द्वार तुम्हारे आया  
मैंने तुम्हें कमी ना ध्याया  
तुने सदा मैं अपनाया

मैं भद्र माया मैं प्रूला  
तेरे उपकारों को भूला  
तुने कमी नहीं बिसराया  
मैं ही जग मैं रहा भरमाया

या मोहु नीदे मैं सोया  
शुभ अवसर हाथ से रखोया  
जब लूट रही थी माया  
तुने कितनी बार जगाया

जल्द जैं सब कुछ धातेरा  
मैं करता रहा मेरा मेरा  
जब अन्त समय का आया  
मैं भन ही भन पछताया

प्रभु लेरवा न अवगुण मेरे  
ज्ञाटो जन्म के फेरे  
अप कृपा करो हररामा  
मैं चरणन सीस झुकाया

232

September  
Saturday

16

1989

सुनो मेरे प्पारे सुनो मेरे चेमी  
कबीरा बिगड़ गयो रे

दूध भी बिगड़ो दहिया के संग मैं  
बिगड़ तो तो मारवन भयो रे

लोहा भी बिगड़ो पारस के संग मैं  
बिगड़ तो तो कचंन भयो रे

मैं भी बिगड़ी सन्तन के संग मैं  
बिगड़ तो तो सन्तन भयो रे

जब मेरी छीत गुरु संगलावी  
नाम खुमारी तब सेन्टदी है  
कहत कबीर सुनो भई सापो  
कबीरा बिगड़ गयो रे

18

233

September  
Monday

1989

सप्ताह के जीतों से आशा न रखा करना  
जब पास न हो कोई हरि ओगज पाकरना।

जीवन के समृद्धि में त्रुप्ति भी आती है  
जो प्रभु के सहारे है उन्हें आपके ठचते हैं  
भगवान् भी कहते हैं अपने पैर दधा करना

दावा न जमा लेना यह देखा लेगाना है  
द्वस प्यर में तूमें पाणी वापिस नहीं आना है  
भगवान् भी करते हैं जीवों पर दधा करना

ऐ भगत ना दुख से रो तुझ से प्रभु दूर नहीं  
भगतों का दुखी होना दाता को मन्दूर नहीं  
वो आप ही आएंगे तुम याद किया करना

234

संदृष्टि तेरी याद महा सुख दाईँ  
एक तू ही रख वाला जग में, तू ही सदा संदृष्टि  
तुझ को गूला जग दुश्मिगारा  
सुमिरण बिन मन में अंधियारा  
तूने कृपा बरसाई

मन ही है जे तेरा द्वारा  
बैठ थही तेरु तुझ को प्रकारा  
प्रेम की ज्योत जलाई  
झाँची प्रीत तुझहारी दाता  
द्वस जग का सब झूग नाता  
हूँ चरण शरणाई

235

September  
Tuesday

19

1989

सच्चिदानन्द है तू ब्रह्मानन्द है तू जीव  
बन गया क्यूँ तू देह में दीवाना

अपने अज्ञान से तू भरमापा  
शेर हो के क्युँ बैंबै मचाया  
मेरा प्यर बार है मेरा परिवार है ये रखना  
बन -

हो के अविनाशी तू जन्मा मरा है  
स्मृति को सर्प जान कर डरा है को  
जे परम भूल है तुझ को नित शूल है  
सपने को सच जाना

तेरी माया ही तुझ को रिभाती  
रवेल रच के तुझ को दिरवाती  
रवेल नित रवेलता कष्ट नित भेलता  
ना छन रवेलो में ऊना

देह मानुष की अविनाशी पर्व  
करलो अब तो कोई कमाई  
शुद्ध दर्पण बना सूप अपना लखाजो पुराना  
बन गया -

936

September  
Wednesday

1989

20

सच मुझ को भिल गया है सतगुरी तेरी गली  
में तो सिर्फ रहूँगी सतगुरु तेरी गली में

मे प्रेम-चीज क्या है मैंने नहीं पाजाना  
तेरा जो प्रेम पाया तब से है प्रेमजाना  
हर पल रहे थे जीवन सतगुरु तेरी -

दुनियाँ को आजमा के थे राजजानेते हैं  
दुनियाँ के नाते जो हैं उड़ते ही दृष्टते हैं  
दुनियाँ दुखों का पर हैं सुख हैं तेरी गली में

दूक ही तो आरजा है अब मेरे दिल की थे तो  
सच के सिवा ज दूजा भाईं मेरी नजर को  
आखिर थे प्राण निकाले सतगुरु तेरी गली में

937

साथे रुचना राम रुचाई  
इक बिनसे इक दूस्पिर माने  
अचरज लश्यो न जाई  
काम क्रोध मोह वश प्राणी  
हरि भूरत बिसराई  
भूठा तन साच्चो वार मान्यो  
ज्यों सपना रैनाई

जो किसे सो सकाल बिजासे  
ज्यों बादर की छाई  
जिन नानक जग निष्पाजानो  
रहयो राम शारणाई

238

September  
Thursday

21

1989

साथ जिसके सतगुरु हैं वो कभी नहीं चढ़ते हैं  
जिन्दगी में वो हमेशा आगे बढ़ते हैं  
दुर्घट सुख में जो समता है वो दुनियाँ से न उरता है  
जिन्दगी में वो सच को पाके रहता है

खुद्दी माया की हर पल स्थिर नहीं रहती  
सच्ची खुमारी नाम की कमी नहीं उतरती  
थे सच राज वा ना समझे तो मुश्किल है  
साथ नहीं कोई आता है साथ नहीं कोई जाता है  
फिर भी हम को क्युँ जहाँ वालों पे भरोसा है

याद प्रभु की हरु पल जो कोई करता है  
उसको फिर दुनियाँ का नहीं रग ही चढ़ता है  
सभी रसों से तो उसको थे रस ही आए  
स्थासों पे एतबार नहीं बक्त हमें रवोढ़ा नहीं  
इसी जन्म में ही प्रभु को पाके, रहना है

सच्चे गुरु की नजर जिस पर पड़ती है  
उसको फिर दुनियाँ की नहीं मस्ती चढ़ती है  
शुद्ध को जाना है गुरु को पहचाना है  
अब दुनियाँ की नहीं जुक्ति की परवाह  
जुक्ति तो यहाँ आके पानी भरती है नहीं

22

September  
Friday

239

1989

सत्संग में आजे से ही  
मेरी दृष्टि बदल गई है  
भगवान को सन्मुख पाकर  
मेरी सृष्टि बदल गई है

थार्डे को अपना माना  
मिथ्या को सच्चा माना  
अब निज को है पहचाना  
हर पुष्टि बदल गई है

जग की भमता जोड़ोड़ा  
भगवान से जाता जोड़ा  
कार्त्तिपत का भ्रम तोड़ा  
कार्मुष्टि बदल गई है

संसार वासनाओं में  
इन व्यर्थ कल्पनाओं में  
जग की सच्च तृष्णाओं में  
सन्तुष्टि बदल गई है

भगवान का मिला सहारा  
विषयों का मिटा विष सारा  
बरसाई असृत झापारा  
अब विष्टि बदल गई है

240

September  
Saturday

(23)

1989

सन्त जगत में आते हैं जग तारन के लिए  
आदि व्यापीय उपाय अधिया तारन के लिए

मूरत से एक सूरत व्यन कर सन्त जगले में आते हैं  
सेवा कर अहा कीर्तन से चार पदार्थ पाते हैं  
रावण रूपी ममता को मारन के लिए

सन्त की महिमा वेद नजाने गुरु ग्रन्थ कहलते हैं  
नारद भी वीणा को ले कर भीत उसी के गाते हैं  
धर्म रूप धरने को आए तारन के लिए

प्रेम किया प्रह्लाद प्रभु से भव सागर से पार हुआ  
नृसिंह रूप धरे नारायण सत्संग में अवतार हुआ  
राम गुरु में भेदन जानो तारन के लिए

24 दिसंबर

२५।

25

September  
Monday

1989

सतगुरु तेरे वचनों में लड़ा प्यार सगाया है  
तेरी वाणी में शास्त्रों का सब सार समाया है

मेरे जीवन की बगिचाँ में कोई घूल रित्तिन सला  
तेरे ऐसा मेरे सतगुरु कीर्ति माली आन सका  
मेरे उजड़े गुलधान को गुलजार बनाया है

कर्म की रवेती में न जाने क्या क्योंयाधा  
आशान की निद्रा में जी भर के सीयाधा  
सूरज बन के तुमने दिन को जगाया है

दूनियाँ में तेरे ऐसा कोई सच्चा जीत नहीं  
तेरे ऐसी प्रीत नहीं तेरे ऐसा जीत नहीं  
दृढ़नि पाकार तेरा मेरा गन हर्षीया है

अक्तों को तारन को तुमने अवतार लिया  
जो आ गए शरण तेरी लोडा उनका पार हुआ  
जो चौरासी से बच कर अपने मैं समाया है

२५२

September  
Tuesday

1989

सन्ता दे वसीले असा राम नाम पाया  
राम नाम पाया असा राम नाम पाया

सन्ता ने दसिया भेद निराला  
तेरे अन्दर वसदा द प्यारा  
अन्दरो ही राम जगाया सन्ता  
जद मस्तक हृष्य लाया

च्परे नु सब लभ छ पके  
दुँदें ने कोई गंगा ते सर्के  
झोई किस्मत जागी  
अपने पर विच दर्दनि पाया द

चन्द्र च्परती जहाँ सुतगुरु आए  
पाहु पवित्र चरण भहाँ पाए  
चन क भाग ठन्हा दे  
जिन्हा गुरु चरणी चित लाया द

२४३

27

September  
Wednesday

1989

ब्रह्मकार वृति है गुरु द्वार से हम लाए हैं इस वृति को रखना मेरे मनवा संभाल के द्वस वृति को रखना संभाल के देखना यह वृति काल से पलटा नहीं रखा दे द्वोऽ अमी इस विषय जाहर ज रखा दे शम द्वम द्वम विवेक को रखना संभाल के ना समझ इसे वृति यह तो है महान धन भिल जाए इसी से तुम्हे पूर्ण परमानन्द जेती करूणा मुक्ति संग करना विहार रे माना के सच्चिदानन्द स्वरूप है तेरा पाए छिना द्वस के कटेगा नहीं फेरा अब आ गई है मंजिल जरा हो जाइशिगर

२४४

हजार गार्दियों गर तुम्हा पे आए इसकी वफा पे यकीन रखना जा द्वोऽ देना तुम द्वस के दरको द्वस की कृपा पे यकीन रखना जहाँ रहो तुम खुदा के बन्दे मे हर पड़ी हैं साथ तेरे घटी खुदा है तुम्हारा दीपव इसमीरणा जे चे जेरा मुश्किल हैं पीर रेसा जे अपने बन्दे को रखा है रखता चे इन्हाँ लेता हर बशर का द्वस की कृपा ---

२४५

September  
Thursday

28

1989

है खुदा का कर्म आज इन्सान है द्वरकाते हम अगर जानकर सी करे तो फिर खुदा क्या करे फिर हरिक्या करे

हमको मालिक जे प्यारा सगा दे दिया और हमारे लिए आज इन्सान बना ये समा तो मिला इक समझ के लिए वक्त घूंही गवां के अगर चल दिए तो फिर समा क्या करे फिर हरि - -

मीठे बोले से दुनियों को आवाज दो जा भुरा कुछ कहो ना भुरा कुछ सुनो ये जुबा तो भिली बोल मीठे कहें इस जुबा से किसी की जो निर्दा करे तो फिर जुबा क्या करे - - -

हर चमकती झट्टीज सोना नहीं रेसे च्योरवे मेरी जीवन को रखना नहीं मेहरबान से हो आरवी की ज्योति भिली इस निराह को अगर बन्द करे तो फिर निराह क्या करे - - -

四百六

29

September.  
Friday.

1989

29 September  
Friday  
हो जाएँ बन्द और तेरा व्यान करते भारते  
इक साथ येही देगा, गुरु ज्ञान चलते

यद्या आपका भैं गाँड़ कुनिधाँ से चला जाऊँ  
हो जाए बन्द वाणी झुण गान् करते करते

सुप्तन की शूल जाँड़ कभी होश में न भूँड़े।  
प्रभु नाम वाले अनृत का पान करते करते

देरवा कर्स मेराहे जब तक ना आप आए  
तब तक न तज से निकले ये प्राण घलते

तेरे ध्यान में रहूँ मैं हर श्वास ही जपूँ मैं  
मरा प्रेम सतगुरु का बस व्यान करते करते  
कृष्ण द्याम पहुँच जाऊँ ॥१॥ बिरी के दांडे जाऊँ  
जुम्हरी कर्म बाठपुली ॥२॥ गोप लगान टूरी - बाली

हरि से प्रभु से लागा रहो भाई  
तेरी जाति हवा ताई

द्वारी बनत २ बन जाई  
एक बात मेहे लागे अचमा

एक बात माहलग जप्त  
उद्देश रवबर नहीं पाई

स्थाही ठाई सफेदी आई  
झुसे क्या कहिए आई

रुक्षाहो ठाड़े सफदा आई  
झुसे क्या कहिए आई  
सेवा बन्दगी और भै-चिन्ता  
सहज जिलयो रपुराई

पुरुष प्रह्लाद नाम से तर गयो  
तर गयो सदना कासाई

248

1989

September  
Saturday

30

१८९ हमारे युवा शिले डास्त कानी  
पाई अमर निशानी-

कागा पलट उरव हसां किन्हा  
 दिन्ही नाम निशानी  
 हसां पड़ुचे सुखु सागर में  
 मुक्ति भरे जहां पानी

जल में कुम्भ कुम्भ में जल है  
 बाहर भीतर पानी  
 विकास्यों कुम्भ जल मांही समायी  
 ऐ गत विरले जानी

मैं हूँ अच्छा हूँ  
 अघाह थाह सन्तान में  
 दूरभा लहर समानी  
 दीवर डाल जाल कच्चा करसी  
 जब मीन पिप्पल अद्वि पानी

अनुभव का ज्ञान उज्जावलता की बाणी  
थे हैं अकाद्य क्रहानी  
कहते कबीर सुनो गई साप्तो । 50  
जिन जानी तिन मानी

२५९

2  
October  
Monday

1989

हूँ कृपा तेरी मेरे सत्यगुरु  
 तूने जीवन मेरा बना दिया  
 औ भटक रहा था जहान में  
 तूने ज्ञान अमृत पिला दिया

मैंने दृढ़ों तुम्हारों प्रह्लाद हाँ  
 पर तेरा पता मुझेन मिला  
 जब पता मुझे तेरा मिला  
 अपना पता छूला दिया

तेरी वाणी मैं हूँ वो असर  
 जिसे सुनके शिलता है मेरा मन  
 हर बद्धार के दिल में ज्ञानका  
 दीपक है तूने जला दिया

तेरे दर की लगी आस है,  
 तेरे दर पे आऊँ ये च्यास हैं  
 इसी आस ने मेरे दृष्ट्य मैं  
 उमगों का दीपक जला दिया

२५०

1989

October  
Tuesday

3

हर वक्त रुद्री हर वक्त हँसी  
 हर वक्त अमीरी है बाबा  
 जब आश्चिक मस्त फँकीर बना  
 किर क्या दिलगिरी है बाबा

दिन को सूरज की महफिल है  
 रात को तरों की बरात बाबा  
 हर रोज मेरे लिए होली है  
 हर रात मेरी दिवाली है

हर रोज मेरे लिए शादी है  
 हर रोज उबारक वादी है  
 हर रोज नई गुलजारी है  
 औ ज्ञान की इक फुलवारी है

हम आश्चिक उसी सनम के हैं  
 जो दिलवर सब से आला है  
 दिल उसका ही दीवाना है  
 मन उसका ही मस्ताना है

धरती मेरा ये विस्तर है  
 आसमान मेरे लिए चादर है  
 हर रोज मेरे लिए आजादी है  
 हर रोज सुनहरी रात बाबा

4

251

October  
Wednesday

1989

है प्यार की दौलत सबसे बड़ी  
सतगुरुं का जगीना प्यार है  
हर दिल की थे दिल में समाते चलो  
सतगुरुं का जगीना प्यार है

प्यासी है थे दुनियाँ नहोब्बत की  
उम्म प्रेम की ग़ज़ों बहाते चलो  
भुरभाई छुई थी मन की कली  
रिवला द्वा भदोब्बत प्यार से

सत्संग की डगर है प्यार डगर  
जो कहती है सब से प्यार कर  
इस प्यार की नेया में लैठकर  
जीवन का सफर ते पर कर

सब एक है ऐक ही सब है बना  
नपरत को करदो दिल से फना  
न लू है न मैं हूँ जोस है खुदा  
फिर कहे रहे हम उनसे खुदा

252

October  
Thursday

5

1989

है राम नाम रस भीनी चढ़ीरिया भीनी

अष्ट कमल का चरवा बनाया  
पाँच तत्व की भीनी  
जो दस मास कुनन में लागे  
मूर्ख भैली कीनी

चादर ओढ़ शाका भत करियो  
दो दिन उम्मको दीनी  
मूर्ख लोग भेद नहीं जाने  
दिन व भैली कीनी

जब मेरी चादर बुन कर आई  
सतगुरुं को दीनी  
ऐसा रगं रगां सतगुरुं मे  
लालो लाल कर दीनी

भगत प्रद्वाद सुदामा ने पहनी  
शुक देव ने निर्मल कीनी  
दास कबीर ने ऐसी पहनी  
ज्यों की ट्यों पर दीनी

6

October  
Friday

253

1989

ज्ञान तेरा दीदार मिले इस पार मिले उसं  
पार मिले, हृष्ण में बारहवार मिले हर-

हे ज्ञान तुम्हारी कृपा से ये प्रेमलग्न लागी मन में  
कृपा से तेरी दर्शनि की सतकर्म से जागी मन में  
बलिहारी हूँ मैं चरणनप्ती जो सतगुरु बन इक्खार  
मिले

तेरे नाम की उपेति लेकार के तेरी इस राहु चे भैंचलती हूँ  
कोई तेरे साथ आ ना हे ले भैं अपने आप ही बढ़ती हूँ  
भैं साज हूँ तेरे तारों का, तेरे सुर भैं मेरे साज मिले

दुनियाँ की अजब ये मस्ती है जग माघा में मतवाती है  
भैं नाम कमाना भी चाहूँ ये देती गुफा को जाती है  
ये भी तेरी इक लीला है अपमान के रूप में प्यार  
मिले

जब सब कुछ मालिक तेरा है अ।  
भैं प्रेम से सब स्वीकार करूँ है दाता जब तू है मेरा  
तेरे राजी में भैं राजी हूँ चाहे जीत मिले आहार  
मिले

जब से प्रह्लिद है तेरी शरण सब रंगो गम मेरे द्वरहर  
ये सतनित आनन्द दर्शनि कर ये नैन मेरे इक  
नूर हुए  
कोई नहीं जस तू ही है त ही क्षनि कर ससार  
मिले

254

October  
Saturday

7

1989 हम तो तेरे दीवाने हैं  
हम जौर जबर को क्षमा जाने  
हम तो तेरे मस्ताने हैं  
हम ज्ञान ध्यान को क्षमा जाने  
मह रंग जो तेरी माघा का  
भूले जीवों को सताता है  
हम रंगे हुए तेरे रंग में हैं  
माघा के रंगों को क्षमा जाने  
वेदों का हमको ज्ञान नहीं

तू आता हमारे ध्यान नहीं  
जब समदशी है नाम तेरा  
झपने से उदा फिर क्षमा जाने  
हम आनन्द रस के भोगी हैं  
नहीं जन्म मरण के रोगी हैं  
हम निर्मल निष्ठुचल योगी हैं  
कलयुग सतयुग क्षमा जाने  
हम खुद मस्ती में रहते हैं  
नहीं जब नीच में बहते हैं  
जो बन आए सो सहते हैं  
ये दुनियाँ हमगो क्षमा जाने  
जो देह द्रष्टि में रहते हैं  
वो तीन गुणों को काढ़ते हैं  
माघा के रूप में बहते हैं  
निज आनन्द को जो क्षमा जाने

हम निज स्वरूप को जाना है  
माघा का पता क्षमा पाना है  
वहाँ अदं ब्रह्म का द्वाना है  
वो काम क्रोध को क्षमा जाने

२५५

9

October  
Monday

हम अपनी धुन में गाते हैं  
 मैं ही तुम हो तुम ही मैं हूँ  
 मैं खुद की बात बताते हैं  
 तुम और नहीं मैं और नहीं

पठ के पठ बन्द रहे  
 तब तक हम भूले भटके पे  
 मिट गया अन्धेरा तब समझा  
 मैं ही तुग

आशी प्रयाग मधुरा भटके  
 जग्मल २ दूँड़ा डट के  
 जब सतगुरुं का आदेश गिला  
 मैं ही - - -

साकार सगुण जाने कोई  
 निराकार निर्गुण जाने कोई  
 हम को इससे क्या भतलब है

अलगज हूँ कोई गज नहीं  
 मैं मर्ज तो आखिर इत्य हुआ  
 सतगुरुं मैं दवा धतलाते हैं

1989

२५६

October  
Tuesday

(10)

1989

हो जा खुब्बी से अपनी भगवान के हृषीकेश  
 मजी दे दोड़ उसकी जैसे भी वो संमाले  
 दुरव सुरव मिलन उद्धरि कर्म के पाल हैं तेरे  
 निष्काम कर्म करके जीवन सपाल बनाले

क्यों वासना के पीछे अपने को तू गिरायें  
 उस काल मां को दामन से अपने को तू बचाले

ममता के बन्धनों में करता क्यों हाथ हाथ  
 कोई नहीं है अपना चाहे तो आजमाले

वाक से भटक रहा है अन्धकार में मुसाफिर  
 करले तू जोति दर्दनि परमात्मा को पा ले

०

October  
Thursday

12

1989

हम अपनी भाँकी देरव-चूके  
 -फिर दूसरी भाँकी क्या देरवे  
 -जब अमर निशानी आ-चमकी  
 -फिर पानी दुनियाँ क्या देरवे

सड़कों पे स्लेचाहे महलों में पले  
 पर चाहे घरों कुछ मिले ना मिले  
 दीदार जो शाहनशाह का हुआ  
 तस्वीर गुलाम की क्या देरवे

जब समझ गए फिर उलझे क्युं  
 जो रखोया था सो पा ही लिपा  
 जब दिल की गली में रोनक है  
 बाजार में जा कर क्या देरवे

हसरत भेरे लोगों की खुशी  
 पल २ में रगे बदलती है  
 हम आत्म रस में धर हुए  
 फिर रूप बनघट क्या देरवे

इन्सान सभी की आरंदो जे  
 अपनी ही सूरत फिरवती है  
 मतलब तो हम सब एक ही हैं  
 फिर भेद की छाष्टि क्या देरवे

१५७

October  
Wednesday

1989

11

हम प्रेम मगर में रहते हैं  
 जो बन आए सो सहते हैं  
 और सुरव से कुछ नहीं कहते हैं  
 यहाँ शादी गमी की रीत नहीं

ये देवा ही सक निराला है  
 नहीं व्यन्ति है नहीं माला है  
 सब वरों का सक ही ताला है  
 कोई मन्दिर और मसीद नहीं

यहाँ शाहनशाह का वासा है  
 पग २ पर रवेल तमाशा है  
 निकले सब कर्मा का पासा है  
 कोई हार नहीं कोई जीत नहीं

यहाँ मन को भार भगाधा है  
 नहीं दुनियाँ है नहीं माया है  
 अपना ही आप समाया है  
 कोई भीत नहीं अभीत नहीं

जब जीव ईशा का भेद मिटा  
 दुनियाँ के आगे रवत्म हुए  
 तब ओरों से कोई प्रीत नहीं  
 तेरा मेरा की रीत नहीं

13)

२५९

October,  
Friday

1989

## हरिओम शिवोरुग्र ब्रह्माणि तत्वमसि - ३

कोज हैं वैरी वैर करे, हैत हैं वैरी वैर करे चाह हैं वैरी-  
 कोन हैं मिज भला करे, सान हैं गिज भला करे गुरु हैं पिज  
 दूजों के जो दोष देरवे शूरव हैं वही-२  
 सत गुरु को जो साखी बनार सच्चा है वही-२

मकड़ी जे हैं जात विद्याया चैन के स्वातिर ही  
 जोदा हैं शूरव हैं मौत का कारण ही  
 अपने बाहर सुख जो ढूँढ़े गूरव हैं वही-२  
 स्वधं स्वस्प प्राप्त जो जाने सच्चा हैं वही-२

त सारवी है त दुष्टा है, उसमें दूट के रहना  
 इसमें जो लाप्पा पहुँचोए आज वो दूर तूकरना  
 जहन बनाने का अम है जिसको शूरव है वही-२  
 शुद्ध स्वस्प प्राप्त जो जाने सच्चा हैं वही-२

कात के कर्म के प्रेर को आज पुरुषार्थ है कहता  
 आज हैं दुरव के जन्म चक्र में कल का बीज वो बोता  
 द्वोती सी पहेली जो ना छुझे शूरव है वही-२  
 सत और नद में जो गिरें प सच्चा है वही-२

260

October  
Saturday

14

1989

शान गुरु का हृष्ण से न गूलों  
 जे भुलाने के काविल नहीं हैं  
 बड़ी मुद्दिकिल से नर तन मिला हैं  
 अह गवाने के काविल नहीं हैं

- चोला अनमोल तुम्ह को मिला हैं  
 - जिसमें जीवन का पूल रिला हैं  
 - इनांस गिन ज के तुम्ह को मिला हैं  
 अह गवाने -

बात मानो तो बिलकुल सही हैं  
 आत्मा में ही शान्ति सच्ची हैं  
 जिसको आत्मा का विष्प नहीं है  
 बुद्धिमानों के काविल नहीं हैं

जिसने नर तन को पाकर कुछ न किया  
 अपना जीवन व्यर्थ ठांका ही दिया  
 जिसन मुख से नाम ज उचरा  
 मुहूं दिरवाने के काविल नहीं हैं

जिसने हीरा जन्म रेसा पाकर  
 रवोज अपनी ज की मन लगा वर  
 भिज सन्मासी वन मन ज जीता  
 संत कहाने के काविल नहीं हैं

15 Sunday

16

October  
Monday

261

1989

अवसर बार २ नहीं आए  
जो आस सतगुरु की शरण में  
जन्म भरण, मिट जाए

ये सर्सार औस का पानी  
पल धिन में उड़ जाए

तन घुटे धन कौनं काम का  
फिर पाघे पछताए

गुरु वचनों से सब भ्रम जाए  
स्को ब्रह्म लरवाय

जीते जीजो कटे वासना  
छहर जन्ग नहीं पाए

सब काटन को सर्वथ साँझ  
जीवन मुक्ति कराए

जन्म २ की प्रङ्गी पाहि  
प्रभु गुरु रूप में आए

262

October  
Tuesday

17

1989

कुछ ऐसी करनी कर प्यारे  
मैं जन्म न बारम्बार मिले  
माया तो बहुत मिल जाएगी  
सतगुर न बारम्बार मिले

इक २ वस्तु से प्यार किया  
किमा प्यार कभी न ईश्वर से  
तू जन्म पूरे बिछड़ा है  
अपने ही पिता परमेश्वर से  
मुक्ति तेरे ढ्करे बेठी है  
जो सतगुर से इक बार मिले

क्यों भ्रम ने तुम्हारो द्येरा है  
कुछ तेरा है न मेरा है  
सामान बढ़ोरा डुनिया का  
जब चिड़िया रैन बरसेरा है  
तेरा क्या तू क्यों सोच रहा  
चाहे हार मिले या जीत मिले

गुरु की कसणा अब तुम्ह पर ढँड़ि  
जो स्नाप उत्तर का पाया है  
गुरु ने कृपा से मन में तेरे  
प्रे क्षान का दीप जलाया है  
तुम्ह अर्जुन को मुक्ति देने  
गुरु कृष्ण का नन अवतार मिले

२६३

१८

October  
Wednesday

1989

करोन शिकायत करोन पुकार  
दोपल का जीवन शुक्र में गुजार

हर हाल में रहना सदा  
होगा वही जो तेरे भाग्य में बंधा (लिखा)  
यही सोच कर दिन धीरम्भ में गुजार

दुर्वै और सुर्वै में कारो दिल को बड़ा  
हिम्मत है दिल में तो बेड़ा ही पारु  
दूर्वै सुल हिम्मत नहीं आगे बढ़ा

लिखा है जो प्रभु ने होड़ा जरकर  
दुनिया हँसेगी जो कारेगा गिला  
यही होगा बेहतर दिन सब्र में गुजार

शुरु की लगन में तू रहना सदा  
होगा वही जो मन्जुरे रुका  
इसी में ही तेरही बेड़ा ही पार

०

२६४

१९

October  
Thursday

१९८९

~~करोन शिकायत करोन पुकार~~  
तेरी कर्म काहानी तेरी आ०भी जाने परमात्मा  
तूने बोया क्या था प्राणी, तेरी आत्मा भी - -

कितने जन्मों से रखोट कमाया तूने  
कितने ही पर्दों में पाप द्युपाये तूने  
अच्छे बुरे की काहानी तेरी - -

जग जिसे कहते हैं कर्मों की रखेती है  
ऐसा कोई बोय उसे बैसा फल देती है  
तूने बोया क्या था प्राणी - -

गलत कदम बिन सोचे जब उठाया तूने  
अन्तर आत्मा ने इक बार जगाया तुम्हें  
फिर भी समझा न तू प्राणी - -

तू समझता था नहीं देरवा किसी और ने  
एक झूठ दिपाने को दस और बोले तूने  
चैन पाता फिर तू कैसे - -

प्रभु के द्वारे तेरा आना ही बहुत है  
बोल दा न बोल पछताना ही बहुत है  
जो थी विपदा सुनानी - -

20

October  
Friday

265

1989

तुम बिन कोई दूजा नाहीं  
सतगुरु इये सिखाया हैं  
मेरे गुरुदि इये सिखाया हैं

जित तित तुही तेरी मूरत  
तेरा रूप अपारा है  
स्वांग भी तुही स्वांगी भी तुही  
तुही रवेल रचाया है

नाम भी तुही नामी भी तुही  
दिल विच भोद न पाया है  
नाम बिना बेनाम भी तुही  
आप में आप दिपाया है

जास भी तुही साकी भी तुही  
आप शाराब पिलाया है  
रचाम भी तुही गोपी भी तुही  
तुही रास रचाया है

गुरुं भी तुही वेद भी तुही  
जीवत ज्योत जगाया है  
तेरी कुदरत तुही जाने  
दूसर अन्त न पाया है

266

October  
Saturday

21

1989

तुम्हें पा के हुगने जहाँ पा लिया है  
जमी तो जमी आसमा पा लिया है

हमको धड़ी है सच्ची ये जो नस्ती  
मिटा ना सकेगी कोई भी हस्ती  
जब से ये भगवन तुम्हें पा लिया है

जो दिनियाँ की जेमत में कुछ भी नहीं हैं  
फिर भी ये मूरब भटक ही रहा है  
सच्चा ये रवजाना मैंनें पा लिया है

तुम्हारे ही घेम में बनी हैं मैं जोगन  
सिवा अब तुम्हारे जेरा कोई न भगवन  
जड़ और चेतन में तुम्हें पा लिया है

23

October  
Monday

267

1989

जामका सिगरण करके मेरे मन में सुख  
तेरी कृपा को मैंने पाया तेरी दया को - - भरआप

दुनिया की ठोकर रवा करजब हुआ कभी बेसहारा  
जा पाकर अपना कोई जब मैंने तुम्हें प्रकारा  
ए नाथ मेरे सर ऊपर तुमने अमृत बरसाया  
रुंग।

तू संग में था नित मेरे थे नैना देरवना पाए  
चर्चल माया के चित्र में थे नैन रहे उलझाए  
जितनी भी बार गिरा हूँ तुमने पल मुझे उठाया

भव सागर की लहरों में भटकाई मेरी नैया  
तट छूना भी मुश्किल था नहीं द्विवेकोई रवैया  
तु लहर का रूप पहनवार मेरी नाव किनारे लाया

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे हर तरफ तेरा उजियार।  
निरैप रमेया मेरे हर रूप तुम्हीं ने धार।  
हूँ शरण में तेरी दाता तेरा तुम्हाँको चढ़ाया



268

October  
Tuesday

1989

24

महोब्बत की बस्ती बसाता चलाजा  
के भरती के गीत गाता चलाजा

महोब्बत के कितने बड़े काम हैं  
न सोने दे इनको जगाता चलाजा

सुख दुर्ख की हृद से आजाद होकर  
महोब्बत की हृद को बढ़ाता चलाजा

महोब्बत महोब्बत महोब्बत महोब्बत  
कोई पुज हो यही गीत गाता चलाजा

महोब्बत के दरिया का तूफान बनकर  
के हर झोय को अब तू बोहात चलाजा

महोब्बत की गहराइयों में समाकर  
नज़ो गीत प्रेम के गाता चलाजा

बंन के मध्य रवाना रवुद ही प्रेमानन्द  
शाराबे महोब्बत पिलाता चलाजा

२०५:

25

October  
Wednesday

मेरे राम सहारा बन जाओ  
प्रभु आप सहारा बन जाओ  
जेरा और सहारा कोई नहीं

गुनहगार में तेर दर आई  
बैन्क समझ के पापी न ठुकराई  
चरणा दे नाल लगा जाओ

धट भीतर मेरे धोर अन्धेरा  
दूनि किस विधि पाँड़ मेरा  
ज्ञान की ज्योत जला जाओ

भव सागर में मेरी नैया  
कोई नहीं प्रभु इसका शब्दैया  
आ कर पार लगा जाओ

२७०

मनुष्य तुराई का व्यर है, अटकता फिरता दरबर है  
जानवर बना भयानक है, मनुष्य तन मिला अचल है  
जानवर जगल में रहते कर्ज इतना थो नहीं करते  
भी ज्ञाता धीता सोता है भही करता जीता भर है

सबक सतगुर से पाना है हुआ सगे आनाजाना है  
अलभ सदा ही उत्तम कर्म करा तुझ अपने साराघर का  
सदा ही उत्तर प्रश्न करो तुझ अपने स्थान रानकल हो  
नमा नित ज्ञान उठाना है, मिला इक ज्ञान का सामर है

1989

२७।

October  
Thursday

26

1989

मेरे सतगुर त मुझे अपनी  
पसंदी का बना लो जी  
मुझे झुकना नहीं आता  
मुझे झुकना सिरवा दो जी

यह देह तेरी है सतगुर,  
यह दिल तेरा दीवाना है  
तूमी मैं डुब ही जाए  
अपने मैं दी समा लो जी

जो हूं तूने बनाया है  
ना पिछला कुछ भी बाकी है  
तूने इतना बनाया है  
तुम्हीं पूर्ण बना दो जी

तूने सब चाह पूर्ण की  
सिर्फ इक चाह बाकी है  
के अब सब काम हो पूर्ण  
आत्म में टिका दो जी

तेरे अहसान है इतने  
इआ क्रबनि में कितना  
शुक्रिया कैसे हो सकता तेरा  
यह भी बता दो जी

27

२१२

October  
Friday

1989

- भैंदोजनगर की शनिवार हुँ  
 और घेंग मण्डल में रहती हुँ  
 स्वप्नम् का पालन करती हुँ  
 नित शान्त समाप्ति रहती हुँ

धीशान अमृत पिलाती हुँ  
 नित विष्णु अर्च शुद्ध सेवा में  
 है शान ही मेरा जीवन धन  
 नित देखा बेगमपुर रहती हुँ

भैं साक्षी द्रष्टा सजवी हुँ  
 समाव सदा भैं रखती हुँ  
 निज आगन्द रूप शिवोहम हुँ  
 जीवन शुभवित जौज उड़ाती हुँ

खुन शान वासुरी बजाती हुँ  
 नित गोविन्द के गुण गाने जैं  
 यह सृष्टि मेरा है शुलग्रान  
 खुद मस्ती भैं मस्त भैं रहती हुँ

भैं द्रष्टा विष्णु शकर हुँ  
 करती उत्पन्न पालन प्रलय हुँ  
 भैं रवेल दिवस भैं रचती हुँ  
 फिर रात शिवोहम रचती हुँ

पलायमान नहीं भैं होती  
 निष्ठुर्णीमध्य निज साधा भैं  
 अब सफल भाषा मम मानुष जन्म  
 जो खुद वो खुद भैं जानती हुँ

२१३

October  
Saturday

28

1989

मेरा प्रीतमवसदा कोलो कोल  
 वेश्वो अन्यर अपना टोल लो टोल  
 मन अपने दी वारो सपाई  
 फिर देवेगा प्रीतम दिरवाई  
 बोल मिठडे लोल लोल लो लोल

सुरत निरत की टोर बनावो  
 नाम दा मनका उसमें पाओ  
 चित नू कर लो अडोल लो डोल  
 घेम की कुंजी शान का ताला  
 विस विष्णु रवोले शिव दधुला  
 फिर लाल मिले अनमोल लो भोल

सत की डण्डी धर्मदा तोला  
 सन्तोष भारी करत है मौला  
 वैराग है पूरा तोल लो तोल  
 गगन मण्डल में कान्ह है वसदे  
 पूरे गुरु दा शान है दसदे  
 वेश्वो अरिवियो अपनी रवोल लो खेल

है अतुल्य तुल्य नहीं कोई  
 इस हीरे दी पररवन कोई  
 है हीरा जग में टोल लो टोल  
 दासी गुरु शरणाई आई <sup>२१ Sunday</sup>  
 जिस से उसने स्मृति पाई  
 मत असत नू रोल लो रोल

274

October  
Monday

30

मन मेरे विचार कीजिए  
सदा सत्गुरु के वचनों से प्यार कीजिए

1989

बार २ माया थोलोभ दिखाए  
फान्दे में मन मेरे तुम को फसाए  
इसका ना कभी इत्तबार कीजिएपग २ पर देरवना घोरवे का जाल है  
द्वसमें न फसना थे जी का जांल है  
अपने को जरा होशियार कीजिएविषयों में भोगों में दिल नालगाड़े  
सुखव का ना ठौर बिना भक्ति पाइये  
बेसक त्र जतन भी हुजार कीजिएसंतगुरु का प्रेम और भक्ति ही सार है  
भक्ति बिना तेरा जीना लेकार है  
भक्ति की त्र मांग बार २ कीजिएदुनियाँ का लोभ मोह मन मेरे छोड़ देए  
सत्गुरु के वचनों से सुरुति को छोड़ देए  
प्रेमी त्र जीवन का सुधार कीजिए

275

October  
Tuesday

1989

प्रेरे सत्गुरु ने उम्मे राजा बना दिया  
रवीला जो रवजाना ज्ञान का महाराजा बना दियाज्ञान की वाणी उन २ के सत्गुरु ने मस्ला बनाई  
आत्म डोर में उन के हर जिजासु को पहनाई  
आनन्द का हर रोमब्र में धरया बहा दियापाँचो ही विकारों की सत्गुरु ने प्रुक्षिप्त बंताई  
द्वृत का काजल पोष्य के फिर सब आत्म द्रष्टिक्षेपाई  
माया का है खेल तमाशा साफ ये दिखा दियासारा जहाँ ही अपना है हीरे मोती क्या करने  
अज्ञानी थे हम अब तक जीते थे माया में मरने  
मोत हुई अज्ञानी की ज्ञानी उम्मे बना दियाहोगी ये भी रूपा गुरु की हम आत्म में रह लेंगे  
जब तक प्राण रहे तन में हँस के सब दुख सह लेंगे  
बालक है भू के हम भगवान से निला दियानीद से गहरी हम को जगाया राजाई दिखलाने  
जन्मों से जो झूले थे उस ज्योत को फिर से जगाने  
तज आत्मा का हम पे सजा के त्यक्त पे बिठा दिया

31

२७६

1

November  
Wednesday

1989

मैं नीवीं मेरा सतगुरु हूँ  
उन्हीं नाल मैं लाई  
चन २ मेरा सतगुरु जिस  
नीवियों नाल निभाई

जै मैं वेरवा अन्दर आपने  
ओंगुण मैंने मिले  
जै वेरवा मैं रहगा तेरी तां  
मेरे भाग सवले

मैं कमली ऐनू अकल न कोई  
करें ना पीर मनाया  
किके दसा उस दी बड़याई जिस  
कोसे न्हु हुस्से बनाया

तू तो सोगा चन हैं ऊँ  
मैं चकोर हां नीवा  
तेरी मेरी दूरी इतनी  
च्यान चर २ जीवों

झूबदी जांदी सी नैया मेरी  
उतो सी रात अन्धेरी  
समर्प्य मेरा सतगुरु जिस  
बाहुं पकड़ लेई मेरी

२७७

November  
Thursday

2

1989

प्रभु के च्यान में डोल रे मन  
घही तुम्हें काम आएगे  
वचन गुरु के बोल रे मन घही

काम तेरा बस खुद को मिटाना  
पहले अपनी खुदी को मिटाना  
है घही सन्तों के बोल रे मन

मन में भैल का है अंधियारा  
ज्ञान का दौसे हो उजियारा  
मन गुरु से खोल रे

त्याग दे अपने मन की खुशी को  
साथी बना ले अपना उसी को  
जीवन व्यर्थ न डोल रे मन

प्यारे सतगुरु देसे हमारे  
लख चौरासी कटी है हमारी  
है मे व्यड़ी अनमोल रे मन

278

3

November  
Friday

दर दरे सवाली इक आग्नि ४९  
 दर आग्नि नु रवाली नहीं मोड़ना  
 छोड़ जिन्हा सहारे संसार दे,  
 दाता दिल ना सवालियादा तोड़ना

भुठेजग दे छोड़ सहारे  
 मलया सतगुरु क्वार तेरा  
 जो कोई आया शरण आपदी  
 मिलया उसनु प्पार तेरा  
 घइ दिता जिन्हें प्पार ससार दा  
 प्रीत उन्हों की चरणा विचजोड़ना  
 बक्को अपने नाम दी मत्ती  
 प्रेम तेरे विच रहा प्रस्तानी  
 उठो बहुदेखा होवे हरदग  
 सतगुरु तेरी खेम जहानी  
 अपने चरणा दी भनितदादानदे  
 तेह तो मांगा मैं कुछ वी होरना  
 सतगुरुजी हुन कृपा कर देओ  
 नाम दे, रंग विच रंग देओ चोता  
 जद तक प्राण रहन इस तन, विच  
 अपदी रहा तेरा नाम अनमोला  
 बस जावे दिला विच भूर्ति  
 रुक जावे मन वृति दा दोड़ना  
 चोली रथेरं प्रेम दी पा देओ  
 अन्तरधामी सतगुरु पारे  
 निर्मल शुद्ध इस गन नूबर देओ  
 दाती तेरी अर्ज गुजारे  
 जो हो जाए मन गुरुजी दी दयालता  
 किसे गलती ही आवे जा ठोरना

279

4

November  
Saturday

1989

अ शारीरा मेरे था इस जग में आहुके  
 क्षमा तुद कर्म कमाया  
 कर्म कमाया तुद शारीरा  
 जहों तु जग में आया  
 जिन हरि तेरा स्वन रचिया  
 सो हरि मन न वसाया  
 धर्म राम जब जेरवा मांगे  
 क्षमा मुरव ले कर जारगा  
 कहे नानक ये मन परवान हुआ  
 जिन सतगुरु से चित लाया

280

गुरु लिन जान नहीं  
 अरे सरियो सुन मे बाती  
 सतगुरु कहता तत्व को जानो  
 एक ही एक है शमित, हो सक  
 सतगुरु कहता देह है पानी  
 तु तो है अविनाशी  
 सतगुरु कहता रवेल रचाया  
 बन के रहो तुम साढ़ी  
 सतगुरु कहता देह है आज्ञम  
 जन के रहो निष्कामी ५५ ११.  
 सतगुरु कहता छैत को छुलो  
 तु है प्रेम स्वरूपी  
 सतगुरु कहता जागते रहियो, तेरा रूप सुजागी  
 सतगुरु कहता प्रेम है पूजा  
 जग में नहीं कोई दुजा.

6

November  
Monday

१४।

1989

पट २ में नम्बरे भगवान  
पहचान सके तो पहचान

शूरज की रोशनी में चाहता की चांदी में  
तारों की भिलमिल द्वाया  
पर्वत गुफाओं में जड़ियों में नालों में  
सब में उसी की है द्वाया  
सृष्टि को गिला वरतन पहचान -

जगवी अद्युत लीला तेरतार होता नहीं किवास  
विन आधार रखड़ी है रपरती बिन स्थाने आगाह  
देरखो लीला है उसरी महान

गर्भ के अन्दर जीव जात्र जें संबंध का पालनहरा  
हाड़ मास और स्फूर्ति जें शुद्ध दूध कीयाएं  
दिया दाता जे जीवन दान

भटक रहा है भूल मुलैया में देरखो शे इन्साज  
भूग बो नामि में कस्तुरी फिर भी भूल जाए  
ज्विना शुरु नहीं नाल पाए

व्युष्ट के पट रहोल हे तीहि दिया भिलही - २.

(१) वट-वट में वो रात लाल है  
वाकुल भाज गत लोल हे तीहि दिया भिलही



282

November  
Tuesday

7

1989

किर जाओमका सिमरण अगर नुस्खा द्याना है  
अरे बाबा थे वो व्यर हैं जो इक दिन घोड़ जाना है

लगा कर प्रीत विषयों से जन्म वृथा गवांता है  
गिला अनसूल थे हीरा जो फिर ना हाथ आता है

मरुल ना साध जाएगा ना जाए बाग बणीचा  
किसे न साध जाना है थे मतलब काजमाना है

तोड़ कर सरांग के बन्धन लगा ले प्रीत सुगिरण से  
दिना भगवान के बन्दे ना तेरा कोई छिना है

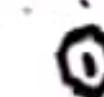
जो रिस्तेदार है तेरे जिन्होंने तेरी उलफात है  
उन्होंने घर की अग्नि जें जिस्म तेराजलाना है

अवस्था जे रही तेरी मता ले ओमका सिमरण  
तेरे कामों बग थे पर्चा तेरे दर पेश आना है

→ (१) रुने बाल ने दिया जलाल - १.  
जारन से भत डोल हे तोहि दिया - - -

(२) यात जीवन का नहि ना कीजि  
दूल हे इलाल गोल हे - तोहि दिया - - -

(३) कहा बोल उलंद भमे - २.  
जजान अनहूद लोल हे तोहि दिया - - -



२४३

८

November

सच्चाइ करने वाले  
सच को नहीं जानेगा  
मन को आत्मा की राह दिखादे  
वरना मन नहीं मानेगा

1989

क्षमा जाने वो सच को जिसने  
शुरू को नहीं पहचाना है  
प्रतगा बन कर नहीं जला जो  
शामा को भूल न पाया है  
मन के कहने पर ही चलता  
खुद को जान न पाया है  
प्रभु को जानेगा वी ही जो  
अन्तर मुख हो जाएगा  
शामा जली है तेरे लिए  
अब तुम्हीं नहीं कुछ करना है  
केवल अपना स्वरूप जानले  
तू न जन्मा न मरना है  
भृष्णुल और विश्वासी का  
बेड़ा पांग से तरना है  
साकार में प्रभु को जानो  
तब निराकार को जानेगा  
पिर पद्धताएं क्षमा होगा जब  
चिड़ियों ने धुग रवेत लिया  
रिस्तेदारी उग की धारी  
सबको तुमने देरव लिया  
निश्चय उसको होगा जिसने  
मन सत्त्वरु की बेच दिया  
मतलब के हैं संगी साची  
युसु शरण बच जाएगा

November  
Thursday

९

1989

अर्जुन से बोले इक रोज मोहन मदन  
भक्त सकंट में आए तो मैं क्षमा करूँ  
सीधी मुक्ति की राहें चलाई मैंने  
कोटेढी राहों पे जाए तो मैं क्षमा करूँ

सारी सृष्टि रची संग में माया रची  
कर्म करने को बुद्धि और शमित रची  
मोहन ममता में फ़सकर तड़फ़ता रहा-२  
फिर उसके भूल जाए तो मैं क्षमा करूँ

कर्म करना मनुष्यों का कर्त्त्वपूर्वक है  
उसमें तेरी सफलता मेरे हाथ है  
कामयाक्षी मिले होके कृपा मेरी-२  
को दिल में अभिमान लाए तो मैं क्षमा करूँ

राम का नाम बुनियाँ में अनमोल है  
नजपे तो मनुष्य की बड़ी भूल है  
पाप करते सारी जिन्दगी दल उड़ी  
सीधे आसुँ बहाए तो मैं क्षमा करूँ  
अर्जुन वेदों पुराणों में लिखा यहीं  
हरना दुखियों के दुरवेद मेरी भक्ति मेरी  
रात दिन वेद गीता को पढ़ता रहा-२  
फिर असल में न ताए तो मैं क्षमा करूँ

कर्म अच्छे करोगे मुझे प्राप्तोगे  
कृकर्मी बनोगे तो पद्धताओंगे  
ज्ञान मोक्ष का अर्जुन सुनाया मैंने-२  
कोई माने ना मानेतो मैं क्षमा करूँ

२४५

10) November  
Friday

1989

रंग वाले देर क्या हैं मेरा चोला रंग दे  
और सारे रंग घों के थ्रेम रंग रंग दे  
रास रंग दे श्याम रंग रंग दे

कितने ही रंगों में भेने आज तक रंग इसे  
पर वो सारे पीके निकले तु ही गूदा रंग दे

अँ जिप्पर भी देरवता हूँ तेरा रंग हैं दिरषतु  
में भी प्रेम रंग में झबा और गूदा रंग दे

अँ तभी तो जानूँगा तेरी रंग अन्दाजियाँ  
जितना घोड़ उतना चम्बके ऐसा गूदा रंग दे

२४६

हूँ गूदा हूँ तेरा - २, कि तेरा नेरा खार हो गया  
गूँ गूँ सन्धुर - २.

(१) तेरे दर्जन बो भे चाली - २  
कि तुज चाली चार हो नेरा नेरे सन्धुर - २.

(२) तेरे चुदर दर्जन चाली  
दर्ज दर्ज उच्चाकार हो गया भे रस्तुर - २.

(३) तेरे दर्ज बो चाली भे चोड़ - २.  
कि तुम्हैं छुबरार हो गया भे रस्तुर - २.

(४) तेरी चाली चाली भे चाल नेरा - २  
बो चुर चार हो गया भे रस्तुर - २.

२४७

मुझे ज़रूर ते राती बड़ी भौंग तु  
२७, गम ना काकी बड़ी भौंग हु - २.

मुझे बड़ा रे दून गहामा तु  
उलाटी नशा तु पिलामा तु  
नजारा पह बहान दिलामा तु  
हकीका बो भामा बतामा तु

मुझे तांडा दी हनी तुम्हा तु  
में चलवा दिरणामा हामा  
पदा उठामा हामा  
जो उलरार हु बतामा हामा - १

ह गहातो बो दून्हामा भक्का तु  
जो दैखे मह दुम्हामा बरे तानिसर  
जो दूब जोत को व्यंग की ह्या - २  
तो जीवन बो उआमा फौतुर - ३

हे इक बो जनराम गुला देती हु  
उनामा रे इबल तुड़ा देती हु  
जो सोधे हु उतवा जगा देती हु  
रस्त जिदी बो पड़ा देती हु - २

ये इब जोत हम जिल्ला देती हु  
दिले रहा रहार जगा देती हु  
नहाउनामा रो रहाता रिष्वा देती हु  
मे कातर बो दारमा बाजा देती हु

दिलामा भे दिल बो जब तो रुदा  
अँ उग्गु बो भुजामा तहीं अब तुदा  
हकीका बा उक्क बो भिला तु भादा  
भे भुरू रो भक्त में उलामा तुदा

चलायम् ३६१५४॥ वाली ग्रन्त ।  
 नो नामः नवायम्॥ रनी ग्रन्त ।  
 ना वरा ३६१५५॥ वाली ग्रन्त ।  
 ले रात्रि दिलायम्॥ वाली ग्रन्त ।

ਮੁਹੂਰਤ ਕੇ ਤਾਪੀ ਦੇ ਕਿਸੇ ਗਾਨ੍ਧੀ ਵੇ  
ਉਨ੍ਹਾਂ ਮਾਮੌ ਰਸਾ ਤੁਲਾਨ੍ਹ ਮਾਮੌ ੨-੨

ਫੇਰ ਤੇ ਭੀ ਜੋ ਬਾਬੀ ਪੈਂਦੀ ਹੈ  
ਦਲ ਵਾ ਦੂਜੀ ਮੇਰਾ ਜਾਨ ਵਾ ਨਾਡੀ  
ਜੇਕੀ ਦੇ ਜਾਗੀ ਘੋੜੀ ਮਾਮੌ ੨-੩

ਲਾਹੂ ਹੋ ਸੁਣੇ ਦੁਗ਼ਮਾ ਵਾਲ  
ਗੈਂਡੀਆ ਮੇਰੀ ਤੇ ਚੁਪੈ  
ਮੁਹੂਰਤ ਵੀ ਰੱਖ ਅੰਦਰ ਗਾਨ੍ਧੀ ੨-੪

ਤੇਰੀ ਬੇਗਾਂ ਨੂੰ ਛੁਦ ਨਾ ਆਪੇ  
ਦੇਖੁੰ. ਪ੍ਰਿਯਾਰ ਹੀ ਲਾਹੂ ਦੀ ਹੀ  
ਛੁਦੇ ਲੇਸ ਕੀ ਜਦਲੀ ਜੁਗਾਂ ਗਾਨ੍ਧੀ ੨-੫

અને એ પ્રશ્ન - માણસ - ૧૧-૧૨  
મરુ, ગઢુ, કોરી વાળી યાંદા  
અને, એનું કોરા એ એ બાંધુ -

2.89

मिल निर्वाचन कीदर हो गया ।  
काकरन सामाजिक दृष्टि निर्वाचन कीदर हो गया ।  
लोकांशुक विभाग निर्वाचन कीदर हो गया ।  
शाही मुद्रा अता सारा रोग निर्वाचन कीदर हो गया ।  
काली पासा बहुत हुवा पार हो गया ।-२  
अरपा निर्वाचन कीदर हो गया ।  
कृष्ण मामा निर्वाचन कीदर हो गया ।  
कृष्ण लोकरा वीवाद हो गया ।  
कृष्ण लोकरा वीवाद हो गया ।-२  
कृष्ण लोकरा वीवाद हो गया ।  
दाखिल वाल राज्य त निर्वाचन कीदर हो गया ।  
देशी लोकरा वीवाद हो गया ।  
देशी लोकरा वीवाद हो गया ।-२  
देशी लोकरा वीवाद हो गया ।  
मल्ल राज्य वीवाद हो गया ।  
देशी लोकरा वीवाद हो गया ।-२  
मल्ल राज्य वीवाद हो गया ।  
देशी लोकरा वीवाद हो गया ।-२

290

- 291

लोहड़ भी ना बड़न वा तो दूर्दि  
सूरत लोना जी रेख है - २.

देह में रख दी राप है  
जह धिल आनंद अस्तरम्भ है  
देह यामान है नाभाम नाश है  
जह ना प्रवाह है, रात में निवास है  
कीर्तन अनुभव ने जगह है - ३ - - -

गाई के छोड़ा, कुरार बनाए  
नाम स्वर्ग के घटन घटाए  
जौही गोपी है  
लोहड़ विलासी राती है  
पौधे विलासी वाही है  
जोही वेदा विलासी है  
पौधा पाही ना ना पाही है - - -

रोना तो रेख है जह उत्तेका है  
गेद ही रुद्रमें, भरण वहू है  
धूमी गह विदाम है, वद वा सिकाम है  
उत्तमा ज्वाम है तथा दद चाह है  
उत्तम भरण तेरी जी विमताह है - - -

आज व्याला इनादत जो जो रात्रियुग ने पिलाया  
आज रेहने आजक मरनी, उठने नशा या भाव  
जोहा इक तंद का बमी लकड़ी भी गह आता  
भय के झूल रही गारने तो दुनिया को अलापा है  
जब तो छाँड़ी हुई बग जान दिल वा हरा है बाकी  
जिसक देख दृष्टि तो है जो तंद भी मै रमामाता है  
सुनी वी नैव व काढ़ी है दुक्ष जो गह रात्रि रात्रि  
हुआ जब रात्रि आपना, अपने अपना दिलाता  
कुदाम तार वर्षल भी जो व दिल वा वठम हो रात्रि  
गही जब होया उड़ जाती तो रुद्र की सुद में पामाता  
जरो ने अफल विजय की राम जब जल की जूँ  
प्रवत्तन को आज जी गीता हुआ हो लगामा है  
जहाँ लड़ - - -

रवाँ श्रीकाल की रिमातुड़ा, वार-२ वार जाहा  
हुए विन मेरा कुर्दी भी अगल  
जापनां - २.  
उठन विन तजे अराधू, गाठ पुरु लुण जाऊ-२  
जोम ही जोम औ अधुर विन वा उन्दर मेरो जाऊ-२  
जो पहरामा सा की पहराम, जिल रारवा जिल है  
जहाँ वरामा हुई बोजाहू, व तेरा दिमादो रवाऊ-२  
तुन लालुर तुन बोहिया मेरा लालरा तुकम बोजाऊ-२  
हे भरगत मेरो तेरा-२, भरण भारजा कुरव पाँडा-२

दल दे सिंहासन उरो कौन आके खे गया,  
मैं मेरी मुक गई, दू ही तू रह गया २।

दिवाके नजारे मैंनू, इक नजर नाल लैटेया  
भालक दिवाके सोनी, मैंनू मार सूटेया  
तेरे भरोसे जीना, तेरे जोगा रह गया— मैं मेरी—  
सतारुक मेंग त्पार, चांद सूरज ते न्याग ऐ  
मिठीया ने गला ते, युफ डशार ऐ

प्रेमवाली नजर नाल, नीनां विच वस गया—  
तीरे जिगर बाके, कार गया दीबाना ऐ  
प्रेमवाली नजर नाल, नीनां  
वाट गेरे सतारुक अजल निशाना ऐ  
विद लान निराकार, आप देरवो आ गया—

त्पार दा की जादू तेरा, साडी दशा निराकी रु  
जोग २ रुग तेरा, साडी दशा निराकी रु  
रोग २ रुग तेरा, अरवा विच जाली रु  
वानु पाके सातारुक जी, मूल जिंदगी दा पालया—

२१५

पिल दे रुग खीछिका रुम नाम की गयती  
इस भाली किली झगड़ि, राहिका उज्ज्वा निलाई रुमती—  
रुम खुद की रखाते राहिका खोबू जागे ता देवा,  
कुरिर दिलभा खुद मिलता, ता की राहा रखता,  
मां भई दी शिर ता कारू, बोरि रुग पिला दे—  
पिलन बोल बुल नहु तुम्हारे, मैंनू तो धौ रखती—  
पूर्ख भयती पिला दे राहिका दोरा लेहेया हुए कार दे—  
हु तेरे बोलो भाला नहीं तुम्हारा नाल पिला दे—  
बाल भाला पीला बोले नहीं गौत ते डरदे,  
राल की चाँचिय रही रहन्दे, शिकाका बदी नोक्के—  
सारे छारे लोड के राहिका भलामा तेरा कारा—  
वारनदा रेरे तीरा भेड़वाना, बनी रहे तीरी गयती—  
रुदवा तीरी भेड़वाने तेरा रुग—२ उज्ज्वा पिला दे—  
पी छुके मैं युफ बुम भुल जाओ,  
गुर्जा रुग नाम भाली—२.

सत्‌ज्ञान की निर्मल-गंगा में तू आकर रोज नह्या कर।  
 तेरे पाप सभी कट जाएगे, तू जीते रोज लगाया कर।

१- इस पतित-पावन गंगा में जिसने दुखकी मीरी  
 उसने उपने अंतर-मन की, सारी ही मैत्र उतारी।

सत्‌ज्ञान के इस गंगा-जल में, उन्मी की त्यास खुग।

२- इस द्वाम की छहती गंगा में, आकर जो नित्य नहला,  
 सह पाप पुण्य धुल जाता है, वो भी निर्मल ही जाता है।

इस द्वाम की निर्मल धारा में ये जीवन नित्य तुम चगनाया  
 कर। तेरे पाप सभी - ---

३- गंगा निकली जगी रही क्ये, सीमित धरती पर लिख गई;  
 जो दशों दिशाएं पावन करती, भगवान के मुख से  
 निकली है।

भगवान शरण में आकरके, नित अपना ज्ञान लूँ।

कर। तेरे पाप सभी - ---।

मैं क्या चाहता हूँ, मैं क्या चाहता हूँ  
 इन चाहों से होना तुदा चाहता हूँ।

यह चाहें मेरी अंजिलों की रकातट  
 इन चाहों से होना तुदा चाहता हूँ।

हूँ चाहों का आलम, गुलामी की दुनिया  
 मैं चाहना ही जिसकी ना राह चाहता हूँ।

शहनशाह कातानी का टौके मैं बोरा  
 ना रहता। इक्षा का बनना गदा चाहता हूँ।

तफा चाहता ना उफा चाहता हूँ।

तेरी मेहर की बरा निगाह चाहता हूँ।

मना सांतरे नू किस तरह पाईदा  
पहले जपना जाप गंवाइदा, मना -  
फूल केदा मैनू मार्ली ने तोड़िया  
सुई दाँड़े विच पाके पिरी लया  
मैं फिर वी मुझे नहीं बोल्या  
हार बानके ते शाम ऊँगे जाइदा  
मैनू सांवरे ने गले विच पा लया ॥ मना -  
दुध केदा मैनू रवाल ने चो लया  
वाटी विच पाके मैनू बिलौ लया  
मैं फिर भी मुझे नहीं बोल्या  
मनरवन बानके ते शाम ऊँगे जाइदा  
मैनू सांवरे नू रयाए नाल बवा लया  
मैनू सांवरे नै भोज लगा लया । मैनू -  
बांस कहनदा मैनू ऊँगल विचो पुटेया  
चोद करके ते रवाली कर सुटेया  
मैं फिर वी मुझे नहीं बोल्या  
हांसरी बानके ते शाम ऊँगे जाइदा  
मैनू सांवरे नै हांलो नाल ला लया ॥ मना -  
सोनो कहनदा मैनू भइ विच सुटेया  
मार २ के रुद्धीड़े नाल कुटेया  
मैं फिर वी मुझे नई बोल्या

हमने देवा है आर आंखों में  
इक उठत नशा सा आंखों में

1- कैसी खुशबू सी छोड़ दी तुमने  
छा कहा है खुमार आंखों में- हमने देवा

2- दूर रहकर भी पास रहते हो  
आता खेसा विचार आंखों में- हमने देवा

3- जगते तुम मुझको आइने जैसे  
जिंदगी लूं कंवार आंखों में- हमने देवा

4- देवकर तुमको झल हँसते हैं  
मिलती झनको बहार आंखों से- हमने देवा

5- फिर जो आए हैं फ्रेम के बादल  
अशक हैं बेशुमार आंखों में- हमने देवा

6- दिल भी बैचैन हो रहा अब तो  
बफी छोड़ा करार आंखों में- हमने देवा

ਮन ਦੀ ਸੜਾਦ ਕਿਚ ਮਾਪ। ਇਕ ਪੀਰ ਨੀ  
ਕਿਡਾ ਸੋਨਾ ਪੀਰ ਨੀ, ਜੋ ਛਾਹਿ ਫਕੀਰ ਨੀ

1- ਭੁਕ ਗਈ ਨੇ ਰੋਜ਼ੇ ਤੁਨ, ਇਦ ਮੇਰੀ ਆ ਗਈ  
ਮੁਲਿਤ ਦੇ ਪੀਰ ਤਿਉ ਹੈਂ, ਨੀਨਾ ਕਿਚ ਦਾ ਗਈ  
ਤੋਦੇ ਚਰਗਾ ਦੀ ਘੁੱਲਾ, ਮੇਰੀ ਤੇ ਜਾਗੀਰ ਨੀ  
ਕਿਡਾ ਸੋਨਾ . . .

2- ਜਾਦੀ ਦਰਗਾਹ ਦਾ ਮੈਂ ਬੇਚਾ ਨਮਾਜ਼ੀ  
ਜੋ ਹੋਵੇ ਰਾਜੀ ਤਾਂ ਰਾਬਾ ਤੀ ਹੈ ਰਾਜੀ  
ਜੇਂ ਜੇਂ ਦੇਖਵਾਂ ਜਾਦੀ ਤਸਵੀਰ ਨੀ  
ਕਿਡਾ ਸੋਨਾ - .

3- ਤੌਰੇ ਨਾਮ- ਦੀ ਬਣੀ ਆਂ ਦੀਵਾਨੀ  
ਤੂ ਟੋਕੇ ਰਾਜੀ ਤੇ ਰਾਬ ਤੀ ਰਾਜੀ  
ਤੇਰਾ ਦੰਡਾ ਪਾਕੇ ਚਢੀ ਹੈ ਰਖੁਮਾਰਿ  
ਕਿਡਾ ਸੋਨਾ - -

ਮੈਨੂ ਸ਼ਾਂਖੇ ਨੇ ਸਿਰ ਤੇ ਕਥਾ ਲਧਾ  
ਮੈਨੂ ਸਿਰ ਦਾ ਤਾਜ ਬਨਾ ਲਧਾ। ਮਨਾ - - -  
ਓਂਮ ——————

302

ਤੌਰੇ ਝਟਖਾਨ ਕਾ ਬਦਲਾ ਚੁਕਾਧਾ ਜਾ ਨਹੀਂ ਸਕਤਾ।

1- ਯਾਗਰ ਚੁਆਕੀ ਨਾ ਹੂ ਮਿਲਤਾ॥, ਬਾਡਾ ਤੁਹਿਕਾਲ ਚੁਡਾਰਾ ਥਾ  
ਜੋ ਪਕੂੰਚਾ ਹੈ ਬੁਝ੍ਹੀ ਪਰ, ਕੋ ਇਕ ਫੁਰਾ ਸਿਤਾਰਾ ਥਾ  
ਤੌਰੇ ਤੁਲਖਤ ਕੀ ਦੁਨਿਧਾ ਮੈਂ, ਮਿਟਾਧਾ ਜਾ ਨਹੀਂ ਸਕਤਾ॥

2- ਮੇਰੀ ਫੁਰ ਕਵਾਂਸ ਪਰ ਦਾਤਾ, ਫਕਤਾ ਤੀਧੀਖ਼ਾਰ ਤੇਰਾ ਹੈ  
ਮਿਲਾ ਜੋ ਅੀ, ਮਿਲਾ ਹੁਆਸੇ, ਮੇਰਾ ਚਚਾ ਹੈ ਮੇਰਾ ਚਚਾ ਥਾ  
ਤੁਮੈਂ ਦੁਨਿਧਾ ਕੀ ਦੀਲਤ ਸੈ, ਰਿਗਾਧਾ ਜਾ ਨਹੀਂ ਸਕਤਾ॥

3- ਬਡੀ ਝੱਚੀ ਤੌਰੇ ਰਹਮਤ, ਬਡੀ ਢੋਠੀ ਚੁਲਾਂ ਮੇਰੀ  
ਲੁਮੈਟੇ ਦਾਤਾ ਸ਼ਮਗ ਪਾਂਝੇ, ਧਣ ਹਰਿਜ ਹੈ ਕਈ ਗੇਰੀ  
ਤੌਰੇ ਰਹਮਤ ਕੀ ਕਾਵਦੇਂ ਮੈਂ, ਸੁਨਾਧਾ ਜਾ ਨਹੀਂ ਸਕਤਾ॥

4- ਜਗਰ ਜੀਵਨ ਧਟ ਸਾਧਾ ਹੈ, ਚੁਣ੍ਠੀ ਤੌਰੇ ਝਾਬਾਦਤ ਕਾ  
ਮੁੰਝੇ ਟੇ ਸ਼ੀਕ ਦੁਨਿਧਾ ਮੈਂ, ਸਦਾ ਤੌਰੇ ਝਾਬਾਦਤ ਕਾ  
ਲਿਨਾ ਤੌਰੇ ਚੇ ਜੀਵਨ ਕੀ ਸ਼ਾਹਾ ਜਾ ਨਹੀਂ ਸਕਤਾ॥

ਤੌਰੇ ਝਟਖਾਨ - - - ।

ਈਰਿ ਤ्यਾਰ ਕਿਨਾ ਆਪ ਨਈਂ ਪੰਦਾ,  
ਤੇ ਸਾਨ੍ਹ ਕੈਂਦਾ, ਚੱਗੀ ਗਾਲ ਨਈ।

- 1- ਜੀਤਾ ਵਿਚ ਬਾਬੜੀ ਨੇ, ਉੰਏ ਫਰਮਾਧਾ ਸੀ  
ਮੋਟ ਮਮਤਾ ਦਾ ਤਧਾ ਕਤਾਧਾ ਸੀ  
ਆਪ ਸ਼ਖਿਵਧਾਂ ਦੈ ਅੰਗ ਕਥਾ-ਤੇ ਸਾਨ੍ਹ-
- 2- ਆਪਨੇ ਰਧੀਰ ਮਿਤਾਰ ਦੀ ਕਥਾਤਿਰ  
ਮਿਤਾਰ ਤ੍ਯਾਰ ਸੁਦਾਮਾ ਦੀ ਕਥਾਤਿਰ  
ਕਹੁੰ ਚਾਲਤਾਂ ਤੇ ਫਿਗ ੨ ਪੰਦਾ-ਤੇ ਸਾਨ੍ਹ- - - !
- 3- ਮਹਤ ਪ੍ਰਹਲਾਦ ਨੂੰ ਵਾਧਦਾ ਕਥਕੇ  
ਆਧਾ ਕੀਝੀ ਰੂਪ ਨੂੰ ਧਾਰਕੇ  
ਤਤੀ ਕਥਕੇਂਦਾ ਦਾ ਕੋਕ ਆਪ ਕੈਂਦਾ-ਤੇ ਸਾਨ੍ਹ-
- 4- ਆਪਨੇ ਰਧੀਰ ਊਰ੍ਜੁਨ ਦੀ ਰਥਾਤਿਰ,  
ਐਂਦੀ ਨਿਸ਼ਚਿ, ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਰਥਾਤਿਰ  
ਭਾਨ ਸ਼ਾਹਿ, ਰਥ ਨੂੰ ਚਲਾਂਦਾ-ਤੇ ਸਾਨ੍ਹ-

ਲੜੇ ਜਿੰਦਿ ਨੂੰ ਜਾਨ ਤੁਲੀਰ, ਜਦੋਂ ਦਾ ਤੇਰਾ ਲਾਰ ਫੈਰੇਧੇ

1- ਜਦੋਂ ਕੀ ਨਿਹਾਰੀ ਢਹੀਵ ਤੇਰੀ ਤਰਵੀਰ ਦੀ, ਹੁਣ ਤਸ਼ਵਾਰ ਦੰ  
ਸੁਦਧ ਬੁਧ ਮੂਲ ਗੁਝ ਆਪਨੇ ਕਥਾਰ ਦੀ, ਹੁਣ ਕਥਾਰ ਦੀ  
ਮੇਰਾ ਕੋਮ ੨ ਜਾਰੀ ਤੁਲੀਰ, ਜਦੋਂ ਦਾ ਤੇਰਾ ਲਾਰ ਫੌਰਯਾ-

2- ਜਾਕਿਵਧਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਤੇਰਾ ਨੂਰ ਸਮਾ ਗਧਾ, ਹੁਣ ਸਮਾ ਗਧਾ  
ਮੁਦਤਾਂ ਦੀ ਸੁਤੀ ਸਾਡੀ ਆਤਮਾ ਜਗਾ ਗਧਾ, ਹੁਣ ਜਗਾ ਗਧਾ  
ਮੇਰੀ ਨਾਲ ੨ ਜਾਰੀ ਤੁਲੀਰ, ਜਦੋਂ ਦਾ ਤੇਰਾ ਲਾਰ ਫੈਰੇਧਾ

3- ਚੋਥੇ ਜਦੋਂ ਦਾ ਤੇਰਾ ਨਾਮਕਾਲਾ ਰਾਂਗੜੀ, ਹੁਣ ਰਾਂਗੜੀ  
ਨਾਚਦਾ ਤਧਾਰ ਵਿਚ ਮੇਰਾ ਜਾਂਗ ੨ ਜੀ, ਹੁਣ ਜਾਂਗੜੀ  
ਗੋਸ਼ਟਾਰਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲ ਗਈ ਸਟੋਰ, ਜਦੋਂ ਦਾ ਤੇਰਾ ਲਾਰ

4- ਐਸੇ ਛੀਟੇ ਮਾਰਦਾ ਆਪਨੇ ਪਾਰ ਦੇ, ਹੁਣ ਤਧਾਰ ਦੇ  
ਪ੍ਰਲ ਜਾਂਦੇ ਮੈਨ੍ਹੂ ਕਾਰੇ ਦੁਰਕ ਸੰਸਾਰ ਦੇ, ਹੁਣ ਸੰਸਾਰ  
ਮੈਨ੍ਹੂ ਦੁਰਕ ਵੀ ਲਗਨ ਟਧੀਰ, ਜਦੋਂ ਦਾ ਤੇਰਾ ਲਾਰ ਫੈਰੇਧਾ-

ये रथ मेरा, मैं राजा हूँ, बड़ी शान से जीतन कर करो

१- ये इंतियां हैं चौड़ी, गलत नहीं दाढ़ी

लगाम मेरे गुरु ने पकड़ी है

मैं मन बुद्धि का साक्षी हूँ - बड़ी शान

२- मैं राजा इस तन का जीतन के चमन का

यहाँ तो सदा ही बहार है, जहा जाऊँ, नुशी पाऊँ - बड़ी शान

३- मेरा ना कोई दुरभन, सभी से अपना पन

विपरी का सारा है रेल यहाँ, सुजात्री का मैं दीप बनूँ

४- ये प्रकृति मेरी दासी, मैं पुराण अतिनाशी

मेरे से ही सारा उहान बना, मैं जात्मा निश्चय में रहता हूँ

५- जगत गेरा गूषण, नहीं है दूषण, गुरु ने मेरी उष्ण बदला

मैं साक्षी सूफ़ि की मौज करूँ - बड़ी शान - - -

६- यही है तत्त्व गेरा, यही है मेरी ठस्ती

मेरी तो बास गस्ती ही मस्ती है

मैं बिन काड़ी का लादशा हूँ - बड़ी शान

कीदा दुखना है गैरूं चाइदा, पर भुख हे दर नईया रवैलदा

- पहला दर गुक शरणी आना,

शरणी आके बड़ी गुरुकाना - कीदा दुखना है

दूजा दर गुक वचन कमाना

वचन कमाकर गर मिट जाना - कीदा दुखना है

तीजा दर सेंधीम लताना

सेंग बहाने, आनंद पाना - कीदा दुखना है

चौथा दरहृद्गजी को जगाना

गुक की जीत के जीत जानाना - कीदा दुखना है

पंजाता दर, सारती को जगाना

सारती के निजकप गे आना - कीदा दुखना है

छठां दर है रास बचाना

रास रचाकर हुस्त जाना - कीदा दुखना है

सतवां दर है ना कुद्द रोना

ना कुद्द रोकाहूँ, ना कुद्द करना - कीदा दुखना है

बाटपत्ते पोड़ां चाइया रुनां फकीरा ने

यारियां राब नाल लाइयां, रुनां फकीरा ने

1- रुनां ने राब नूं कीदी लनाया, प्रेमदा जाल लिखाया -  
अवित्यां राब नाल लाइयां रुनां फकीरा ने - -

2- जालम रोग इरक देरोगी, हरदम यार दीदार दे पोइँ  
उल्लियां तारीयां लाइयां, रुनां फकीरा ने - -

3- नाल साई दे जवित्यां लादे, अंदरों लारों इक हो जाए  
इलाही यारियां लाइयां, रुनां फकीरा ने - -

4- गोदड़ी दे नाल ना व्यार रुनां नुं  
ना कोई डर, ना कोई रवाप, रुनां नुं  
नैनां भावियां लाइयां, रुनां फकीरा ने - -

5- अपने मैं है मस्त आशिक,  
मस्ती मैजा रुनां दा कंग.  
कामना स्कल्प मुकाइयां, रुनां फकीरा ने - -

208 88804 888  
1860 2986633 04

922 96- 922 96

Tata Sky

"अवर्ज"

- एक ही अनेक हर उगाह उसे ठों जागाए  
वो ही तो इक सहारा

- फुल की जीर्ण रुकुबुलु समाई है  
की सब की है समाप्त

दिन की अडकानु में वो उज्जोता है पल  
वो रास नस में समाया  
मुल जोते हैं वो लितना पास ही हमेह है  
वो ही तो इक सहारा है एक - -

- साथ है अपने वो सामन अपना  
की है तो हम नहीं हैं  
दुर्घां छाड़ि दुनियां की अलै भै  
वो है तो हम नहीं हैं

आंक लो अन्धे उस दे आज अपुकारा  
वो ही तो इक सहारा - -

- एक पहली है रुक, अच्छे जी जानी है  
सब मैं हूं सब उम मैं हूं  
बुद्ध सागर है सागर ही बुद्ध है  
बुद्ध की सागर बना है  
सागर बुद्ध है, सागर बुद्ध में समाप्त

ਹੁਕ ਜੇ ਜਾਣ ਜਾਣ ਤ੍ਰਧਾਤ ਜਾਣਾ  
ਖਾਲੀ ਖਾਲੀ ਬਾਤ ਦੇ ਰੋਗਾਂ ਦੀ ਆਨ੍ਦ

ਅਖਿਵਾਂ ਹੁ ਕਪੋਲ ਜੋਨ, ਜੋਨ ਦੇ ਤ੍ਰਹਾਂ ਮੈ  
ਨੇਥ ਵਿਡਵਾਲ ਪੁਰਾ ਹਾਂ ਰਖਵਾਲ ਮੈ  
ਹੁਕ ਰਖਵਾਲਾ ਤੇਕਾ ਹੁਕ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਦੂ  
ਹੁਕ ਘੜੀ ਹੀ ਤੇ ਫੇਰੀ ਤੁਲਾਂ ਕਮਾਉ ਨੂ  
ਖਾਲੀ -

ਦੂ-ਦੂ ਭਾਵੇਂ ਹੋ ਕੁਲ ਬਨ ਜਾਏ ਹੋ  
ਏਂਹੀ ਦੂਰ ਪੱਕੇਂ ਹੋ ਜਾਣ੍ਹੇ॥ ਚਾਨ ਜਾਏ ਹੋ  
ਚਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਾਰ ਹੁਕ ਨੋਤ ਸ਼ਬਾਨਾਂ ਦੂ  
ਹੁਕ ਦੇ ਕਿਧਾਅ-ਛੂ ਪੀਜੀ ਪਰਾਈ ਨੂ  
ਖਾਲੀ -

- ਹੁਕ ਆਂਦ ਦੇਖ ਆਪਨੀ ਕੁਨੀਆਂ ਬਾਵੰਦ ਤੇ  
ਚਿਨ੍ਹਾਂ ਰਸਕਾ ਸਾਕਾ ਦੂ ਤੇ ਪਾਰ ਦੇ ਕਾਰ ਪਾਰਾਂ  
ਜਿਸ ਨੇ ਰੀ ਸੱਚੀ ਲਿਲ ਦੇ ਆਂਦੇ ਲਗਾਈ  
ਸਾਤਰੁਕ, ਹੀ ਮੀ ਤੇ ਸ ਕੀ ਆਂਦੇ ਬਣਾਈ ਦੂ  
ਖਾਲੀ -

- ਮਹਿਨ ਦੇ ਲੱਭਾਂ ਦੀ ਲੋਧੀ ਪਾਣੀ ਕੀਂਦੀ  
ਆਖਿਆਂ ਖੌਲੀ ਛੁਲ ਕਾਨੂੰ ਕੀਂਦੀ ਜਾਂਦੀ  
ਮਾਨਾ ਛੁਲ ਕਾਨੂੰ ਮੈ ਬਡੀ ਕਾਲਾਨਾਂ ਦੂ  
ਲੇਖਿਆ ਹੁਕ ਵਗਨਾ ਕੀਂਦੀ ਹੀ ਕਮਾਉ ਨੂ  
ਖਾਲੀ -

ਹੋ ਕੁਕੀਨ ਹੁਕ ਕੀ ਹੋ, ਤੇਕਾ ਚੋਨ ਹੁਕ ਜਾਣ੍ਹੇ  
ਤੁ ਪੂਰੀ ਜਾਣ੍ਹੇ। ਜਾਣ੍ਹੇ ਤੇਕਾ ਚੋਨ ਹੁਕ ਜਾਣ੍ਹੇਂਹੋ॥

1 ਜੀਵਨ ਦੀ ਵਾਹਿਆਂ ਕੁਝੀ ਹਾਂਡੀ ਹੀ,

ਤੁਝੀ ਆਂਦੀ ਵਿਚਲੇਖੀ।  
ਤੇਰੀ ਕੁਲਲੁ ਮਰ ਦੀ ਵੂ ਤੁਹਾ ਮੈ,

ਦੂਹੀ ਵੂ ਤਾਲ ਕਲਿਆਲੀ

ਤੇਰੀ ਆਨਾਂਦ ਪਾਂਨੀ ਚਰਹੂਰ ਹੁਕ ਤੇਰਾ ਮੈ -

ਲਿਲ ਦੇ ਵਿਚਾਰਨਾ ਚੌਮ ਦੀ ਰਾਮਾਨਾ

ਤੇਰੀ ਤੁਝੀ ਆਂਦੀ ਹੁਕ ਹੁਕ ਹੁਕ

ਮਾਨ ਕੀ ਨਾਵਾਰੀ ਹੀ ਰੁਹਾ ਹੁਕ ਹੁਕ

ਆਨਾਂਦੀ ਆਨਾਂਦ ਪਾਂਨੀ

ਤੁਝੀ ਲਿਲ ਹੀ ਵਿਛਾਂ ਚੌਮ ਤੇਰੀ -

ਤੁਲਕ ਕੀ ਰਾਮਹੁਕ ਲਿਲਾ ਦੂ,

ਆਪਨਾ ਦੀ ਟਵੀਨ ਹੁਕ ਹੁਕ

ਹੁਕ ਗਾਂ ਚਿਟਾਂ ਹੁਕ ਹੁਕ, ਹੁਕ ਹੁਕ ਹੁਕ ਹੁਕ

ਹੁਕ ਹੀ ਹੁਕ ਹੁਕ ਕੀ ਹੁਕ ਹੁਕ ਹੁਕ ਹੁਕ ਹੁਕ ਹੁਕ

ਕੁਵਾਂ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਹਾਲ ਸਿਮਰੀ ਜੀ ਤੇਜ਼ ਹਾਂ  
ਲਗ ਹਾਂ ਬਣਦਾ ਜੀ ਤੇਜ਼ ਹੈ ਰਾਮ ਨਿਦਾਨ

संवादा वी शोता आरदा, रहा, मैं

चरराम है मरताम चरराम है तो  
 क्षेत्री राम है तो गांडी राम है तो सीराम है तो

— ताडी की की लुगा चालका है, दोरे ११-२  
दोरों पाल्कों मध्यमा की लंबदा हूँ और सेवा  
चोरा हूँ और चाला आगा हो लुग्न लाव

- **ਹੋਸੀ** ਬਾਬੀ ਕੁਝਾਂ ਵਾਡੇ ਪ੍ਰਾਪ੍ਤ ਹੋਏ ॥  
ਫ਼ਲਦੀਨੇ ਰਾਗਾਂਕਾਂ ਕੁ ਲਾਵਾ ਜਾਈ ਹੋਏ  
ਗਿਆਨਿਕ ਪਲ ਤੁ ਲਿਖਾਰੇ ਨਿਵਾਜ਼ ਜਾਈ ਹੋਏ ॥

—  
ਹੁਕਮ ਮਨੁ ਲੈ ਪਿਆਪਦ ਅਸਤ ਦੇ ਪਾਂਧਾਰ  
ਦੇ ਚੌਥੇ ਵਿਚ ਕੁ ਜੋ ਬਾਟ ਵਾਹਿਗੁਰੂ  
ਚੌਥੇ ਸਾਡਾ ਜੀ ਨੇ ਦਿਓ ਹੈ

— वारा लोमडा रा मालिक रे २७१८।—  
सर्वना कु देही आत्म यामी  
कु देही जाती उल्ला फुला कु देही

ਕੁਮੈ ਕੀਣੀ ਦੀ ਆਂਦੀ ਹੁਲ੍ਹਾ।  
ਮਾਲਿਤੀਆ ਮੈਂ ਬਨ੍ਹ ਦੀ ਪਿਆਰੀ  
ਫ਼ਲਾਗ ਰਹਿੰਦਾ ਅੜ੍ਹੇ ਮੁੜਾਵ ਫ਼ਲਾ।

" ਮਾਡਾ " 313

ਚੁਕ ਕੇ ਜੀਵੇ ਦੀਨੀ ਲਾਗ ਜਾਈ  
ਦੀ ਜਾਈ ਸੁਹੱਲੇ ਦਾਨੀ ਲਾਗਾਤ ਹੈ।  
ਅਮੂਲ ਰਾਸ ਦੀ ਗਈ ਆਖ ਰਸ ਦੀ ਗਈ

ਹਾਥ ਨਕਾਰ ਦੀ ਅਗਲ ਛੁਕ ਟਾਂਤੀ।

ਤੌਮੇ ਜੀ ਰੁਕਾ ਰਾਹੀ ਰੁਕਾ।

ਪਾਂਧੀ ਗਾਗ ਪਾਂਧੀ ਜਾਗਿਨੀ  
ਸੁਲਾਂ ਆਗ ਗਈ ਰੁਕਾ ਹੈ।

ਧਹ ਰਾਹਿਨੀ ਜੇ ਸੁਲ ਗਠਾ ਕਰਾਓ  
ਸਾਲਾਕ ਦੇਖਵ ਭਰੀ ਰੁਕਾ ਹੈ।

ਕਹਿਤ ਕਾਕੀ ਸੁਨੀ ਚੱਡੀ ਰਾਹਿਨੀ  
ਤੇ ਪਰਿਵਾਰ ਗਈ ਰੁਕਾ ਹੈ।

ਨ ਸਦਾ ਪਕਾਡੀ ਜਾਰੀ ਵੱਡੀ ਲਿੰਗੇ ਰਾਲ ਹੈ।  
ਚੁਕਵਾ ਵਿਚ ਰੋਦ ਕੇ ਜੀਨੁ ਸੂਲ ਜਾ ਗਾਵੀ  
ਚੁਕਵਾ ਜਾਲ ਜੀਡੀ ਹੁਲ੍ਹੀ ਜੀਨੁ ਸੁਲ੍ਹੀ।  
ਜਾਨੁ ਕੀਲ੍ਹੀ ਤੁਹਾਨਾ ਆਖ 29।

ਮਿਨਾ

ਸਾਲਕੁ ਰਾਹ  
ਹੈ ਮਹਾਰਾਜਾ, ਗੀ ਪ੍ਰੀ ਰਾਈ ਰਾਂ ਫਾਰ

ਚਾਲੀ, ਗੀ ਪ੍ਰੀ  
ਤੀਬਲਾ ਚੂਲ ਲਾਡੁ ਨਾਹੀ ਹਾਂਦਾ ਕਾਹਾ ਦੇ ਕੀਵ

ਕੈਚਾਰਾ, ਸਾਲੁ ਸੁਨੀ - ਹੈ, ਹੈ

ਲੁਝ ਜਾਰ ਕੁਗਿਗਨ ਪੀਰ ਤ੍ਰਾਲਿਆ

ਵਾਡੀ ਜਾ ਪਾਵੇ ਪਾਰਾ, ਜੀ ਹੈ -

ਸਾਹਿਬ ਪਾਲੀਰ ਕੀਨ ਰੇਗ ਰਾਲਿਆ

ਰੇਗ ਦੇ ਕਹਾਂ ਚਿਲਾਰਾ, ਗੀ ਹੈ -

कुकार राह मे रह नार उस देखते

मूर्ख होता है वह को देखते  
कुकार

लगते गिरा है तस के लिए

लगते अगर जीवन मिल जाएगा तो लाली ना लाए

जाए तो दीवार को झुकत जुहू के लिए

माँगता सासगदा तो जानकर नहीं  
भाले आज आज रखता देखते

कुकार जी लेखा गये लिए तेरा

जाकी जुनाई तो तु मुख्यारा के देखता  
हर सुखारी तो हुए के मुख्यारे देखता

आजमाझे तो यह खिलाफा देखते

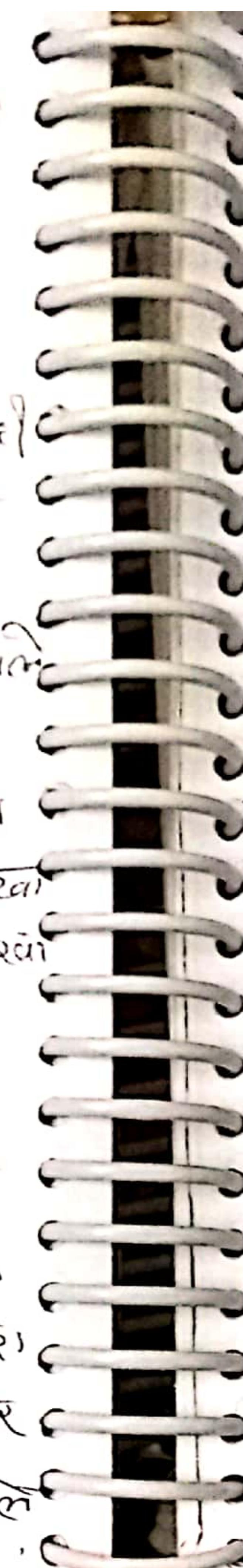
काठाना है तु तु तु तु आगा ले

पोत बनाई हुई तेरा तो छाकरा आगा

धूम तो चाहत तेरा धूम रेखता तेरा

पार हो जा तु तु तु तु तो छाकरा आगा ले

कातनी हो गी तु तु तु तु तो देखते



जी जी की तेरा तेरा तेरा सच्च बालगाद

रख ले गरीब जान के

पर्खा केरा पानी डोका

ओ जो हैरे हो पावा, रख ले

जानक गरीब दृष्टि पाया होर

हरि चोल लिया बड़ियाद, रख ले

सकल द्वार को छाड़ की

बहया होर तेर, रख ले

बाद गों तो लाज देखत

गोबिन्द दास उम्हारा, रख ले

उच्च उपार छअन रवाची (सजाम)

जी जान तुरा तेर, रख ले

गावत तुतर सुनी उतर

बिन दू पाप वागर रख ले

पर्खु प्रत झुगद जो तार

पाहन पार उतर रख ले

जानक दास तेवी बालगाद

(जी) सदा - २ बदिलक्ष्मारी - इन्हें ले

उरीब जान के जी खुस्ती जान भूमि

हैं वे राहिला, नहर बेगीला, बुझी हादीरा  
जोड़ वे जीव तेरा छिला भेद सीरा

सुन वडा आख, सन लौट, कौदा वडा डीदा हौट  
कीमत पारे न अद्या जीरे, लद्दो वडा तेरे रहस्य सभापे  
हैं मैं बाहिला

सब सुरिल मिल सुरिल राहि  
राहि कीमत मिल कीमत  
जानी द्याएँ उरग छुल्लहाहि, लद्दो जाहे तेरी बिठ्ठगाहि  
के भेरे साहिला

सब सब राहि तध, राहि चंगाचाहिया  
सिद्धा पुरस्का तीया बड़-आहिया  
तुम बिल सिद्धी बिली बांदे न बाहिया  
कड़ी मिल जाहि बेंग रहियहिया  
दै भेरे बाहिल

उखड़ा वाला बचा बेनारा  
रिखत गरे गरे गोडारा  
जिस तु देवे तिखे बचा चारा  
जानाक सक्ष सवारा हुरा

हैं मैं

राहि सुवास रुम्मी गो गिल्प  
मन अप्पा वी तुल्ल फिल  
पुरा बुका वा सुन अप्पेला  
पाह बदल फिल वा देवा

राहि आनिला बाला तरहा  
आरा जाना की छुलि मन रहा

राहि उपाद वा बिनती बेल  
राहि बाला रहा राहि राहि तरहा

राहि सुठ वा रुम्मी राहि  
राहिल रुठ वा अल्लराहि.

राहि बाला वी रहे लिला राहि  
जानाक बुका पुरे लालारा

पैकेज का सब कुल देती है

206

- मुझे अब तो सारी बड़ी माल है  
रहा हम का बड़ी बड़ी सीधी है

बड़ा गाय श्री तुने जगाया कुम्ह

अलादी नहीं हूँ पिंगाया कुम्ह

जो जाए जो लाल भरवाया कुम्ह

हमीनो जो मारी भरवाया कुम्ह

मुझे आख्य दी तुने रसी उत्ता

तो हम वाय मे जाना भरवाया थाया

हूँ कुदूर जो तुवाया हाया

जो असरोर हम हूँ जगाया हाया

हूँ गर्दों जो कुनाये जो वो - 2 लाठें

जो देखे जो कुनाये जो जो निसार

जो देखे जो कुनाये जो जो लिंगा थाय

जो जीत मे आये जो घोरन छाय

जो जीत नाम हटाये हैं देती है.

हुक्का से है देती है.

जो सोचे है उन जो जाना देती है

सभव जीज्वली जो चाहे देती है

पैकेज का सब कुल देती है

जो रस रोके जा देती है

मी हृष्टव दे रहा थे परवा देती है  
पै बाहर की दिया जना देती है

- प्रियवापा मीरे रिंग लो उबले खुद  
की उस से को गुंग से नदी अंबलुवा  
हल्कीजा ओ उबल तो मिला हुआ  
चौरे कुरुक्ष के मरती के निम्न सदा  
कुप उबल लो सावनी बड़ी गाज है।  
उदा गम न लाको बड़ी गाज है।

— X —

हर हाथ के दाता है जो बुद्ध माला है  
उन के घर चुवियाँ ही होती बरसात है

हे याद जिने दाता हर दात मिले उन हो  
बिन माणे चुवियाँ हो, सागात मिले उन हो  
सुख पा कर मी, सुख हो जो न मन  
मरनाते हैं  
उन के घर चुवियाँ —

जापा के सब पीजिए, चाढ़ि में बुद्ध लोड़िए  
फिर उस की बहनत, को लभा भे अलोड़िए  
यह चियाँ जो गाने की सुख ही पाते हैं  
हर हाथ —

हर सुख देने वाला दाता है न मुहूर्त  
प्रत्यक्ष लोचुवियाँ हैं मुहूर्त के विशुलण  
आदिगा सत्यना का जो मत भे जसोते हैं  
उन के घर —

दया दाढ़ि बुद्ध की आपार, वो ही तो है निराशा  
ऐवा सिमररा सलसंग लोली की भे अपार  
सुधिगा रसतरुरा को जो मा भे बरसात है  
उन के घर —

मेरा बैशी मैं मुझा  
मुझे ना कोई भारे..

ॐ

Date: 1.3.2011  
Page No. 1 Friday

प्रक्षणानी बहुत गहरा है, उसकी जा नहीं पा सकते।

भ० ने कहा - इष्टज्ञान का अंगारा सबके अंदर पड़ा है।  
मैं ऐसे, इर-जिहाव से एक भया है। युक्, उस वास्तव  
को हिलाता रहता है और अग्रि चुन्नवतित हो जाती  
है। सूना सकना कोई नहीं -। तुम इतने दूरा हो जाओ  
कि तुम्हारा रंग बाब पर चढ़ि, किसी का रंग तुम्हारे  
ऊपर न चढ़े। गृहस्थ ऐसे ही जान की शुद्धजात होनी  
है। जो घर-गृहस्थी ऐसे भयदा नहीं करेगा, वो युक्  
की, निः की, क्या भयदा करेगा। घर में युक् के, मर  
के, भिट कर भलेंगे। अपने जिस कुद नहीं करोये ऐसा किमी  
नहीं चाहेंगे। मौन हो जाएंगे, निश्चद हो जाएंगे।  
प्राप्ति कर : करके अपने निः को नजदीक लाओ। अरु  
दू ही तो आया है, हर क्षम में दू ही तो आया है।  
भ० को बुलाएंगे तो भ० आ जाएगा। जात-क्रादी हमारी  
भ० वाली हो जाएगी। यह जाते हैं संसार वालों की तरफ,  
तो हम संसारी हो जाए। जिलता कुद भी नहीं। पुकृति  
से समता आव है। आवना बक, जैकी ही रखनी है - क्योंदि  
बुरा नहीं भले मन के पास हो। जिस बात से छूटना चाहते  
हो - पुकारो निः को - भ०। मुझे इस बात से छुड़ा दे।  
हम छूटना नहीं चाहते तो हमारी उचार में बतनी तीव्रता नहीं  
होती। पुकारेंगे तो छूट जाएंगे। हम दो नाव में पाव  
रखना चाहते हैं तो कहीं पहुँचेंगे नहीं। ऐसे ही आव रखें।  
निः से गहरी तार होगी तो शरीर का आँग कुट जाएगा।  
देह ही नहीं रहेगी तो मैं - मेरा, नामन्य, निंदा-चुम्ली कहों  
रहेगी। सारी निशाकारीय बालि हमारे तन में उकट हो जाएगी।  
इसना भ० को आगे रखे कि हम फैदे होते पाए और बो-